मानव मन्दिर

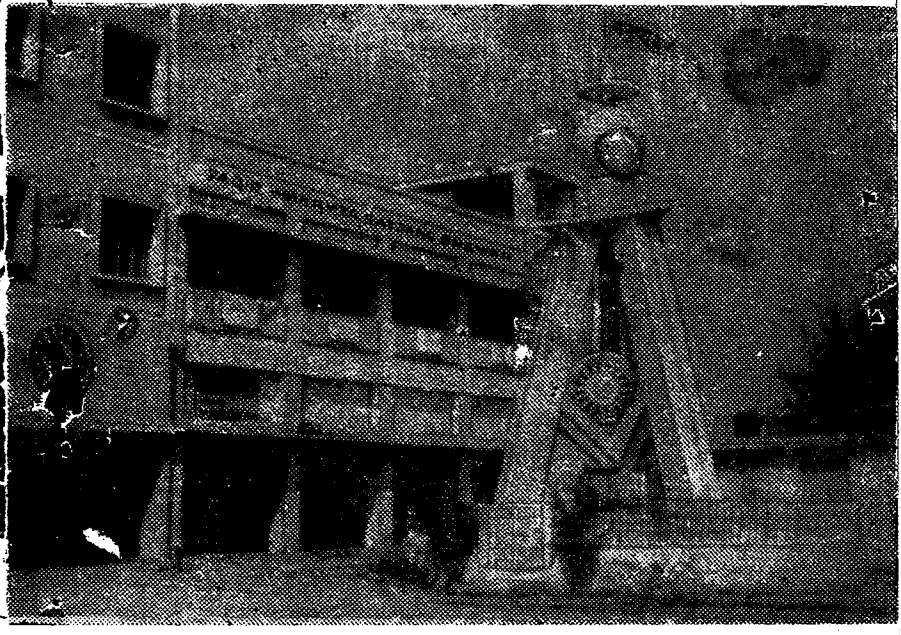

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट
सुतेहरी रोड, होशियारपुर
द्वारा अमूल्य भेंट

FORM I

(See Rule 8)

Place of Publication	**Hoshiarpur**
Date of Publication	**10th of every month**
Periodicity of Publication	**Monthly**
Printer's Name	**Dr. Paras Ram Aggarwal**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir. Hoshiarpur**
Editor's Name	**Dr. Paras Ram Aggarwal**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.**
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir of partners of shareholders, holding more than one Percent of the total capital	**Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.**

I, Dr. Paras Ram Aggarwal hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated :

Signature of Publisher

Printed and Published by : Dr. Paras Ram at Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir Hoshirapur, for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
15-2-87 को होगा ।

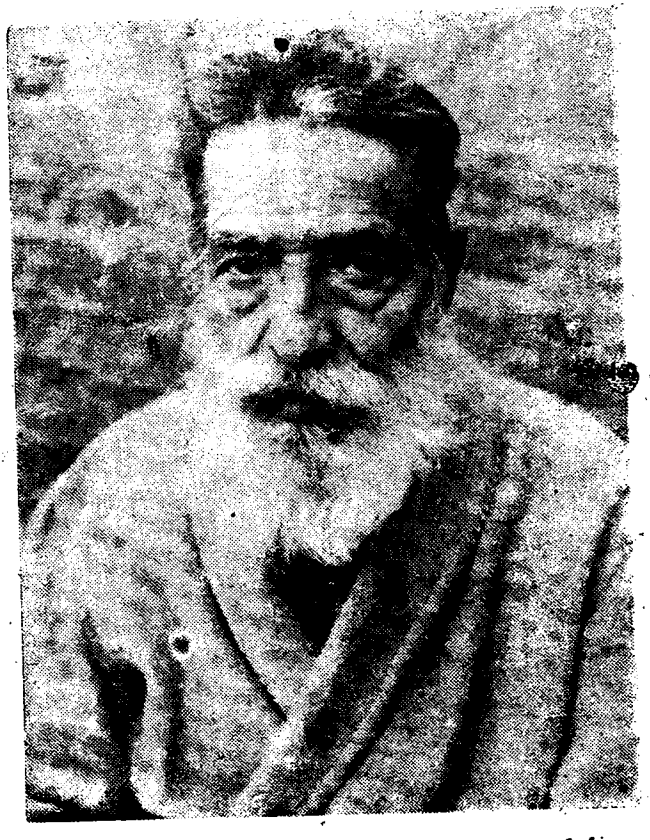

Param Sant Param Dayal Faqir Chand ji Maharaj

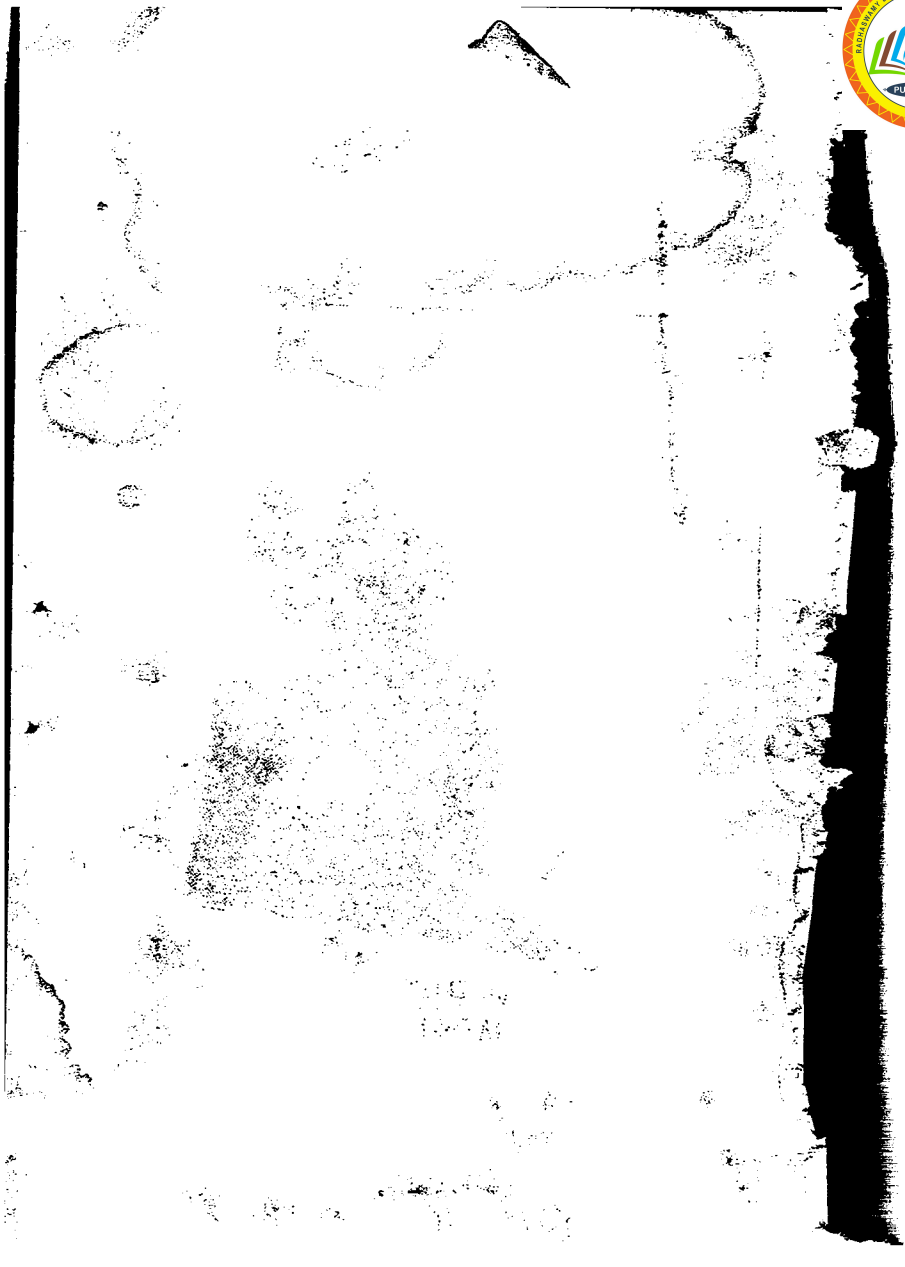

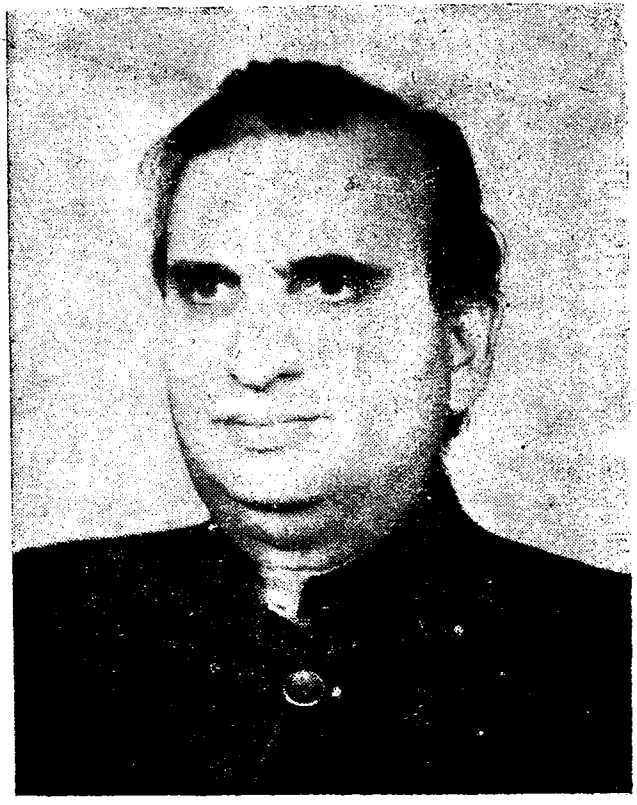

Param Sant Manav Dayal Dr. J. C. Sharma ji Maharaj

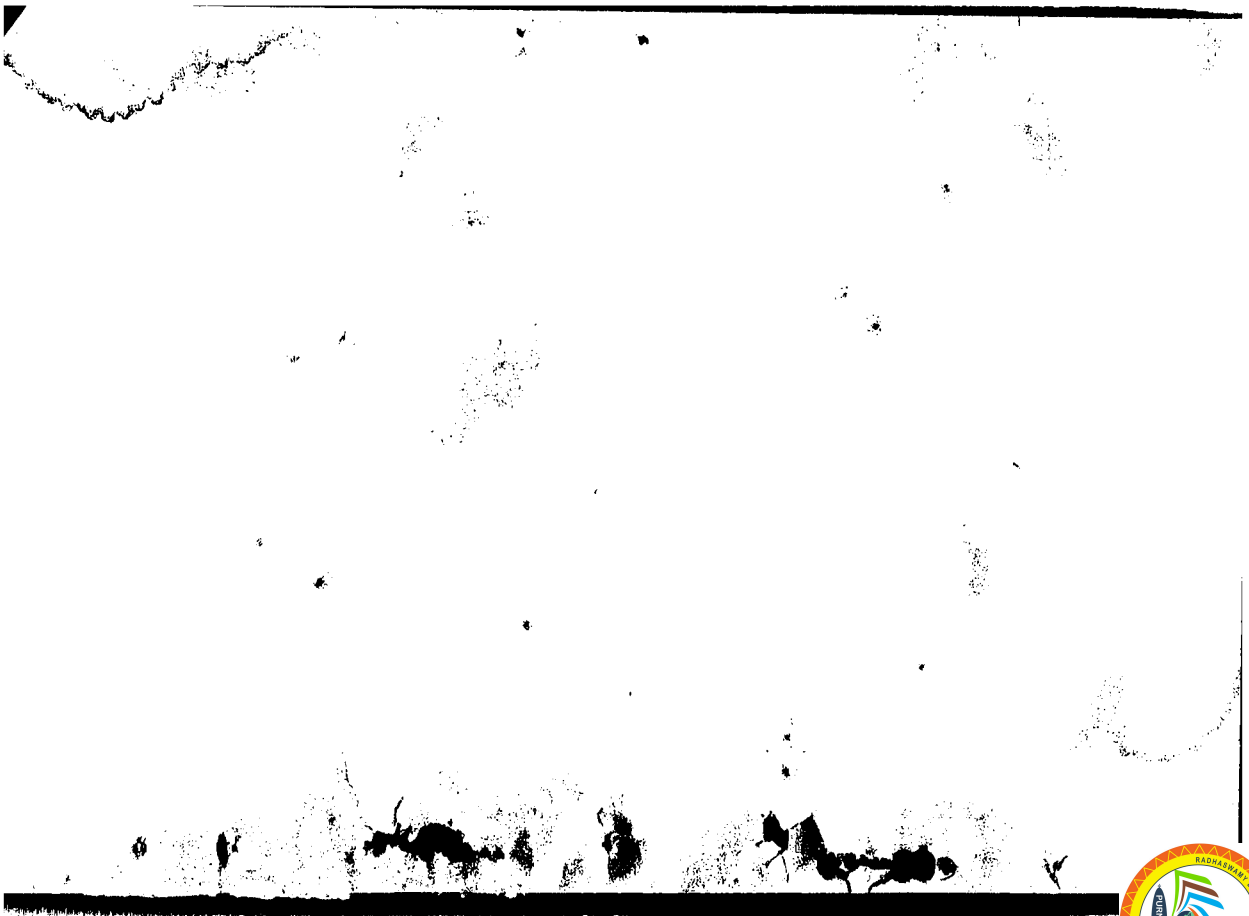

मासिक—

मानव मन्दिर

विश्व में मानव मात्र के सामाजिक सांस्कृतिक
और आध्यात्मिक कल्याण और विकास की
सेवा में संलग्न मासिक पत्र

BE MAN
मनुष्य बनो

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 13	मंगलवार 10 फरवरी 1987	संख्या 10

सत्संग हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज

राधास्वामी धाम 10—8—1920

प्रश्नोत्तर

(ठाकुर नन्द सिंह साहिब तथा हज़ूर दाता दयाल जी महाराज)

प्रश्न—राधास्वामी मत के मानने वालों को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से शक्तिशाली होना चाहिए लेकिन वो कमज़ोर नज़र आते हैं। शरीर के कमज़ोर और दिल के बुज़दिल, कमहिम्मत और आध्यात्मिक दृष्टि से दुःखी मालूम होते हैं। इसका कारण क्या है ?

उत्तर—इसका कारण यह है कि राधास्वामी मत ने एक सामाजिक समूह की शक्ल धारण कर रखी है। समूह में हर प्रकार के लोग होते हैं सबकी प्रकृति अलग-२ होती है और ये अपनी प्रकृति के अनुसार काम करते हैं। जहाँ समूह होता है वहाँ बलवानों के साथ कमज़ोर और अच्छी प्रकृति वालों के साथ बुरी प्रकृति वाले भी रहते हैं। यह विचार कि राधास्वामी मत में सबके सब निकम्मे होते हैं ग़लत है, ऐसा

नहीं है। अच्छे और बुरे हर प्रकार के लोग समाज में रहते हैं।

प्रश्न – मेरा मतलब कहने का यह था कि जैसे जैनियों बौद्धों और सिखों ने खास-२ प्रकार की अच्छी हालत पैदा कर रखी है कम से कम इनमें भी वही विशेषता किसी न किसी शक्ल में प्रकट होनी चाहिए थी।

उत्तर—वह विशेषता तो विद्यमान है लेकिन तुम्हारा यह विचार कि बौद्धों, जैनियों और सिखों में सबके सब अच्छे थे या अच्छे हुए हैं ठीक नहीं हैं।

प्रश्न—यह तो मैं मानता हूँ कि समाज में सब एक प्रकार के नहीं होते लेकिन उनमें विशेषता रहती है और मुझे वह विशेषता राधास्वामी मत में दिखाई नहीं देती।

उत्तर—अगर जैनियों, बौद्धों और सिखों में विशेषता थी तो वह राधास्वामी मत में भी मौजूद है क्योंकि जिस वक्त किसी विशेष प्रकार का चलन दुनिया में पैदा होता है तो वो खास नाम, खास रूप; खास नियम और खास शक्ल लेकर आता है।

प्रश्न—राधास्वामी मत में बौद्धों की तरह मानसिक शक्ति वाले, जैनियों की तरह तपस्वी और सिखों की तरह शूरमा और योद्धा नज़र नहीं आते।

उत्तर—क्योंकि तुम राधास्वामी मत में मौजूद हो इसलिए उसके गुणों की तरफ से तुम्हारी आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ है। उसमें भी खास-२ विशेषता के लोग मौजूद हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि सबके सब विशेष हैं। हाँ, कोई-२ इनमें भी ऊँची श्रेणी की हैसियत के लोग मिलेंगे। अगर यह बात न होती तो राधास्वामी

मत का प्रकटाव दुनिया में न होता। तुम अगर पन्थ की वाणियों को पढ़ोगे तो अपने विचार बदल लोगे।

प्रश्न—मुझे इस बात पर एतराज़ नहीं है कि राधास्वामी मत में भले लोग होते चाहे वे अब भी मौजूद हैं। मेरा सवाल तो यह है कि मैं इस श्रेणी के आदमियों को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से बलवान देखना चाहता हूँ पर यह बात मुझे नज़र नहीं आती।

उत्तर—इस बात का उत्तर ऊपर दे दिया गया है।

प्रश्न—मेरी सन्तुष्टि नहीं हुई क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि इस श्रेणी में अधिकतर लोग बीमार हैं, चिड़चिड़े हैं और किसी न किसी प्रकार की दुर्बलता उनमें मौजूद है।

उत्तर—ऐसा तो होना ही चाहिए। धोबी के घाट पर मैले ही कपड़े जाते हैं।

प्रश्न—लेकिन यह तो नहीं होता कि सबके सब कपड़े मैले ही रह जायें, उजले और साफ भी तो नज़र आयें।

उत्तर—भाई, घाट पर तो मैले ही कपड़े रहेंगे। हाँ जो कपड़े घाट से साफ होकर के निकलेंगे वे बेशक साफ और सुथरे ही रहेंगे। एक उत्तर तो इसका यह है और दूसरा उत्तर यह है कि तुम स्वयं अपने दिल के अन्दर जा कर देखो कि तुम कैसे हो? मुमकिन है कि तुमने अपनी आँखों पर खास रंगत की ऐनक चढ़ा रखी हो और राधास्वामी मत का हर जीव इसी रंग और रूप का नज़र आता हो। यरकान (पीलिया) के मरीज़ को हर वस्तु पीली ही पीली नज़र आती है।

प्रश्न—मैं इस बात को मानने वाला नहीं हूँ। अगर मुझे सब लोग ऐसे नज़र आते तब तो आपका कहना ठीक

था परन्तु सबके सब ऐसा कह रहे हैं कि राधास्वामी मत के लोग झगड़ालु; ईर्ष्यालु और आपस में एक-दूसरे की शिकायतें करने वाले होते हैं।

उत्तर—यह ठीक है और ग़लत भी है। तुम एक झाड़ू से सबको झाड़ना चाहते हो, ऐसा नहीं है। जहाँ शिकायत के योग्य लोग नज़र आते हैं वहाँ अच्छी आदतों वाले बुज़ुर्ग लोग भी मिलेंगे।

प्रश्न—अच्छी आदतों वाले बुज़ुर्गों का होना किसी समाज में हैरानी की बात नहीं है। मैं इस बात को समझता हूँ कि हर समाज में अच्छे और बुरे लोग होते हैं। मेरी नीयत सिर्फ यह है कि मैं राधास्वामी मत के बहुत से आदमियों को हर पहलू से उच्च आदर्श वाले देखना चाहता हूँ।

उत्तर—तो तुम किसी समय देख लोगे। यदि तुम्हारी इच्छा है और तुम दिल से ऐसा चाहते हो तो दुनिया में सब कुछ मुमकिन है। अगर तुम सचमुच ऐसी आशा रखते हो तो उस आशा को वास्तविकता में बदल दो। तुम खुद हर पहलू से अच्छे बन जाओ और राधास्वामी मत का सारा समाज अच्छा हो जायेगा। दृष्टान्त के तौर पर सुनो। एक नौजवान किसी वृक्ष के नीचे बैठा हुआ अफसोस और हसरत के साथ कह रहा था—"हाय; मेरे देश की हालत बहुत खराब है, मैं चाहता हूँ कि मेरे देश में सब वीर और ताकतवर होते और इसकी हालत बदली हुई नज़र आती।" संयोग की बात कि एक वृद्ध पुरुष इस वृक्ष के दूसरे भाग में बैठा हुआ था जिसे उस नौजवान ने नहीं देखा था, वो सामने आकर कहने

लगा। "सुन नौजवान, तू अपने दिल को पकड़ कर हिला दे सारी दुनिया हिल जायेगी। तू अपने अन्दर प्रसन्नता पैदा करने वाला परिवर्तन पैदा कर ले तमाम दुनिया बदल जायेगी। तू बहादुर और प्राणों की आहुति देने वाला हो जा तेरा देश भी वैसा हो जायेगा।" यही बात मैं तुमको भी कहता हूँ।

प्रश्न—आपने या तो मेरे सवाल को समझा नहीं या उत्तर देने में टालमटोल कर रहे हो। जो बातें आप कह रहे हैं ये सबकी सब मैं समझता हूँ। मेरा तो एतराज़ यह है कि अधिकतर लोग कमज़ोर शरीर वाले क्यों हैं? इनको तन, मन और आत्मा की दृष्टि से दृढ़ होना चाहिए। ये सुरत-शब्द योग का अभ्यास करते हैं इनके अन्दर ऊपर से धार आती है और उस धार की विशेषता होनी चाहिए ये भिन्न-2 प्रकार के लोग हो जाते हैं।

उत्तर—मैंने उत्तर तो दे दिया तुमने उस पर ध्यान नहीं दिया। दुनिया में हर शख्स की तबीयत और प्रकृति अलग-2 होती है। राधास्वामी मत में जो लोग आये हैं वे हैरानी और एतराज़ योग्य हालतों से निकल कर आये हैं अभी तक पुराने विचार उनके अन्दर मौजूद हैं और सबके सब दूर नहीं हुए, एक बात तो यह है। दूसरी बात यह है कि अब तक राधास्वामी मत को परीक्षाओं से गुज़रने का अवसर हाथ नहीं आया। कोई समाज हो उस समय निखार पर आता है जब उस पर मुसीबतें आती हैं। मुकाबिला के लिए जब हाथ-पाँव संभालने पड़ते हैं उस वक्त उसमें वीर और योद्धा पैदा होते हैं। जिन

समाज वालों का तुमने नाम लिया है उनके इतिहास में यह मौका आ चुका है। राधास्वामी मत अमन-पसन्द श्रेणी है। अगर वह इस परीक्षा और मुसीबत के दौर से नहीं गुज़री तो धीरे-2 कायदे के मुताबिक अपना असर पैदा करती जायेगी और मुमकिन है कि वह किसी वक्त Ideal Community बन जायेगी।

प्रश्न—अब तक मुझे तसल्ली के योग्य उत्तर नहीं दिया गया।

उत्तर—अपने विचार को थोड़ा और स्पष्ट कर दो तो मैं उत्तर देने की कोशिश करूँ।

प्रश्न—मेरा एतराज़ साधारण लोगों के लिए है विशेष के बारे में नहीं है।

उत्तर—मेरा जवाब विशेषता को लिए हुए है जिसमें आम लोग भी शामिल हैं।

प्रश्न—यह मुझे समझाइये मैंने नहीं समझा।

उत्तर—सुनो, किस्से के तौर पर सुनाता हूँ—किसी फकीर ने दुनिया के नियमों की बुनियाद रखनी चाही। उसमें भिन्न-2 विचार के आदमी आकर शामिल हुए। शिक्षा तो यह थी कि सब एक नियम पर चलें, एक मालिक का नाम लें, और एक ही रिश्ते में जकड़े हुए हों। समाज के लोग उस शिक्षा के चाहने वाले तो हुए लेकिन अपने विचार को पुराने प्रभावों से बचाने में समर्थ न हो सके। उसमें से जो ब्राह्मण थे उन्हें मिठाई खाने की चाट (इच्छा) थी। "ब्राह्मणाः मिष्टान्न प्रियाः" इसी तरह स्तुति करने लगे :—

राम नाम लड्डू गोपाल नाम घी।
कृष्ण नाम मिश्री घोल घोल पी॥

और जो राजपूत थे उनके अन्दर हुकूमत और घमण्ड का विचार मौजूद था। उनकी स्तुति और तरह की थी :—

राम झरोखे बैठकर सबका मुजरा लें।
जाकी जैसी चाकरी ताको तैसा दें ॥

और उसमें जो बनिये शामिल हुए उनकी स्तुति और ही तरह की थी :—

साहिब मेरा बाणिया खासा।
तोले डण्डी रत्ती मासा ॥

और जो शूद्र थे वो कहने लगे :—

जात - पात पूछे नहीं कोई ।
हरि को भजे सो हरि का होई ॥

देखो, इन चारों के असूल तो एक ही हैं मगर प्रकट करने के ख्याल अलग-2 हैं। इसी तरह राधास्वामी मत में लोग खास-2 तबीयतें, खास-2 मज़ाक और खास-2 इच्छाएँ लेकर आये हैं और वो अपनी-2 प्रकृति के अनुसार काम भी कर रहे हैं। उनमें नुक्स तो है और शुरू-2 में नुक्स रहता ही है। नुक्स कुदरत की खला में भी दाखिल है लेकिन चलने दो तुम अपना काम बनाओ ये भी सब अपना-2 काम बना ही लेंगे। जहाँ राधास्वामी मत में सन्त, साधु और भीख माँगने वाले हैं वहाँ राधास्वामी मत में पाखण्डी भी मिलेंगे जिनके बारे में भविष्यवाणी भी की गई है :—

गृही जीवन बहुत सतावें, खावें पीवें और धमकावें।
पूजा अपनी बहुत करावें, धन खेंचें व्यापार बढ़ावें ॥
वग़ैरह, वग़ैरह, वग़ैरह।

———

सत्संग परमदयाल
फ़कीर चन्द जी महाराज

शब्द

मंगलम् गुरु शब्द रूप, अनाम नाम प्रकाशनम् ।
मंगलम् शब्दार्थ शब्दाधार, शब्द निवासनम् ।।
गुप्त अपने आप में, जब अलख अगम अनाम आप ।
जब प्रगट आनन्द ज्ञानाकार, अरु सत धाम आप ।।
साज सन्त समाज मंगल, काज जीव उद्धार को ।
आपने धारण किया है, परमसन्त अवतार को ।।
आप हैं आधार सबके, आपके आधार सब ।
वार पार से रहित आप हैं, और वारापार सब ।।
संग देकर सत का सतसंगत में, जीव अधीन को ।
सिंध सदगति से मिलाया, जीव रूपी मीन को ।।
सैन बैन का आसरा, सतसंग द्वारा दान दे ।
शब्द योग सिखाया अनहद, धाम पद निर्वाण दे ।।
धन्य सतगुरु राधास्वामी, पार भव से कीजिये ।
भक्ति मुक्ति योग जुगती, ज्ञान शक्ति दीजिये ।।

सुनो ! इस शब्द में उस गुरु की स्तुति है, जो अपने वचन से मनुष्य को नाम और अनाम की दुनिया का ज्ञान

दे। नाम उसे कहते हैं कि जो वस्तु प्रकट रूप में आई हुई है और अनाम वह है जो प्रकट रूप में नहीं आई है।

त्रिकुटी का साधन

मैं ब्राह्मण होता हुआ प्रारम्भ में राधास्वामी मत या कबीर मत या सन्तों की वाणियों को जो मुझे विचित्र प्रतीत होती थीं सुन न सकता था और मैं यह देखना चाहता था कि क्या सचमुच वह परमतत्त्व, ज्ञानस्वरूप इस जगत् में अवतार लिया करता है ? मैं अवतारों को मानता हूँ। मैंने ब्रह्म के अवतार को माना, राम के अवतार को माना, कृष्ण के अवतार को माना मगर राधास्वामी मत का रहस्य प्रारम्भ में मेरी समझ में नहीं आया। जहाँ तक मेरी बुद्धि और शक्ति ने काम किया मैंने निःस्वार्थ और निष्कपट होकर इसे समझने का प्रयत्न किया। जहाँ तक मुझसे हो सका मैं अपने आपको सच्चाई के साँचे में ढालता चला गया और हार्दिक इच्छा थी कि जो कुछ मुझे अनुभव होगा उसे कह जाऊंगा, मानो कि मैं रिसर्च (खोज) करता था। आज 73 वर्ष की आयु में भारतवासियों को बहैसियत गुरु या महात्मा या रिसर्चर (खोजी) के बता देना चाहता हूँ कि इस संसार में माँग और पूर्ति के नियम के आधीन वास्तव में समय-समय पर महापुरुष जगत् के कल्याण के लिए प्रकट हुआ करते हैं। जो लोग उनके बताये मार्ग पर चलते हैं वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा करके सफल होते हैं। मैं सारे जीवन के अनुभव के पश्चात् स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि मेरी बातों से यदि आपको ठीक प्रतीत हो तो उनसे लाभ उठाओ मगर अफसोस है कि मुझसे ऊटपटांग या असलियत को पर्दे में रखकर नहीं कहा जाता जिस तरह और कहते हैं।

थोड़े दिन हुए कि एक व्यक्ति मेरे पास कुछ प्रसाद लेकर आया। बोला—"महाराज ! मेरी भावज कई दिन हुए घर से भाग गई थी। मैं प्रातः उठा। अभ्यास में गया। आपका ध्यान किया। आप मेरे अन्दर प्रकट हुए और कहा 20 दिन बाद मंगलवार को वह आ जायेगी और सचमुच ऐसा ही हुआ।"

ऐ भारतवासियो ! मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि मैं इस घटना से नितान्त अनभिज्ञ हूँ। ऐसे और अनेक उदाहरण मेरे पास हैं कि मुझ पर विश्वास रखने वालों पर जब कष्ट पड़ा है और उन्होंने मेरा ध्यान किया है तो उनका कहना है कि मैं उन्हें उस समय उपाय या राय बता देता हूँ जिससे उनका कष्ट दूर हो जाता है। विश्वासियों के ऐसे वृत्तान्त सुन-सुन कर मुझे यह निश्चय हो गया है कि जो व्यक्ति किसी आशा को लेकर अपने अन्दर में त्रिकुटी पर साधन करता है या ध्यान करता है उसकी वह आशा पूरी होना स्वाभाविक है क्योंकि विचार की फिलॉसफी के अनुसार चित्त की वृत्ति एकाग्र होकर ब्रह्माण्ड में फैलती है और वांछित वस्तु को ढूंढ़ कर ले आती है जिससे वह आशा या इच्छा पूर्ण हो जाती है। इसी सिद्धान्त के अनुसार जो व्यक्ति अपने अन्दर किसी रूप को चाहे वह राम का हो चाहे कृष्ण का, चाहे जैन महात्मा का हो चाहे मुहम्मद का, चाहे सन्त कृपाल सिंह का हो अथवा किसी और का, जिसमें उसे विश्वास हो और यह भी विश्वास हो कि वह इष्ट या आइडियल उसकी हर आवश्यकता की पूर्ति कर देगा तो यह अनिवार्य है कि उसका अपना ही विश्वास और श्रद्धा उस रूप द्वारा उसका काम बना दे और उसका पथ-प्रदर्शन न करता रहे।

इस स्थान को जहाँ ध्यान या साधन किया जाता है त्रिकुटी कहते हैं। वहाँ ध्याता, ध्यान और ध्येय तीनों मौजूद होते हैं। इसी त्रिकुटी से समस्त सम्प्रदाय उत्पन्न हुए। हमारे प्राचीन ऋषि भी यहाँ पहुँचे। आयुर्वेद के रचयिता इसी स्थान पर आये और भी जिन्होंने खोज (Research) की वह भी इसी स्थान पर आये और अपनी इच्छाओं की पूर्ति में सफल हुए। यह याद रहे कि प्रत्येक व्यक्ति त्रिकुटी लगाता है अर्थात् त्रिकुटी के स्थान पर अनजाने पहुँचता रहता है। यह दूसरी बात है कि त्रिकुटी में पहुँचने वाला सफल हो या असफल। यदि त्रिकुटी ठीक बनी अर्थात् ध्यान में मज़बूती है तो सफलता अवश्य होगी और यदि ध्यान में मज़बूती नहीं है तो समझ लो कि त्रिकुटी कमज़ोर है। ऐसी दशा सफलता की कोई गारंटी नहीं हो सकती। इस त्रिकुटी से त्रिकुटी लगाने वाले को पथ-प्रदर्शन (रहबरी) भी मिलता है जो उसे अपने प्रयोजन में सफलता प्रदान करता है।

अब मैं भारतवर्ष के गुरुओं से पूछता हूँ कि क्या उनके रूप द्वारा लाभ उठाने वाले शिष्यों के बारे में उनको उस समय की जानकारी होती है जब वह शिष्य उनका ध्यान करके या उनका रूप बनाकर अपना कष्ट दूर कर लेते हैं और अन्य ढंग से लाभ उठाते हैं? क्या वह कह सकते हैं कि वे स्वयं उस समय शिष्यों के अन्दर प्रवेश करते हैं? हो सकता है कि उनको इसका ज्ञान हो या वह आप शिष्यों के अन्दर प्रविष्ट हुए हों मगर कम से कम मुझे इस बारे में किञ्चित् भी जानकारी नहीं है।

थोड़े दिन का जीवन है मैं क्यों झूठमूठ कहूँ कि मुझ पर विश्वास करने वालों के साथ होने वाली घटनाओं का

मुझे इल्म होता है अथवा मैं स्वयं उनके अन्दर उस समय जाता हूँ। मेरा अनुभव यह कहता है कि गुरुओं को न तो ऐसी घटनाओं की जानकारी होती है और न वे स्वयं शिष्यों के अन्दर प्रवेश कर सकते हैं मगर मैं इस बात को दावे के साथ नहीं कह सकता कि सब गुरुओं की मेरी जैसी दशा है। दुनिया में हर बात की सम्भावना है। सम्भव है कोई गुरु ऐसा भी हो जो शिष्यों के साथ होने वाली घटनाओं की जानकारी रखता हो और स्वयं उनके अन्दर प्रवेश कर जाता हो। हाँ, मैं स्वयं किसी के अन्दर नहीं जाता।

हर व्यक्ति की त्रिकुटी अलग-अलग है। इसलिए ज़रूरी है कि जो निष्कामना वाले महापुरुष संसार में हुए उनकी त्रिकुटी एक दूसरे से अलग हो। क्या आप जानते हैं कि एकान्त में उनकी त्रिकुटी किस वस्तु की लगी थी? अपनी वासना या इच्छा की, यह उत्तर है। इसी त्रिकुटी के सहारे वेदों की रचना हुई। पुराण भी ऐसे ही बने। अन्य सूक्ष्म कार्य भी इसी त्रिकुटी के कारण हुए या होते हैं।

समय के महापुरुषों का प्राकट्य

वातावरण के अनुसार जीवों के भाव और विचार जहाँ-तहाँ फैले हुए हैं और निष्काम और निःस्वार्थ पुरुष के जो संसार में खास मिशन लेकर आया है, मस्तिष्क पर विशेष प्रभाव उत्पन्न करके सोचने-विचारने और त्रिकुटी लगाने पर विवश करते हैं। उनकी त्रिकुटी जगत्-कल्याणार्थ होती है। वह ऐसी राय या उपाय बताते हैं कि जीव सुखी रहें और आवश्यकतानुसार स्वयं क्रियात्मक (आमिल) और पथ-प्रदर्शक बनकर जीवों के दुःखों को दूर करते अथवा उनकी आवश्यकताओं को पूरा करके उन्हें सुखी बना देते हैं। इसको 'माँग व पूर्ति' (डिमाण्ड और सप्लाई) का नियम

भी कह सकते हो। इसीलिए कहा गया है कि "द्वार खट-खटाओ और मिलेगा" या "ढूंढो और पाओगे"। इसी वायुमण्डल के रेडीयेशन्स (Radiations) प्रत्येक व्यक्ति पर प्रभाव डालते रहते हैं और जीवों को प्रभावित करके उन्हें बुरे या भले, जैसे भी प्रभावों को लिए हुए हों, काम करने पर विवश करते रहते हैं।

दुनिया में गुरु दो प्रकार के होते हैं। एक वह जो पूर्णतया जगत्-कल्याण के लिए काम करते हैं, दूसरे वह जो अपने संकल्प को लेकर त्रिकुटी लगाते हैं और मिला-जुला काम करते हैं। आप लोग भी अपनी त्रिकुटी लगाकर अपना काम कर सकते हो। केवल प्रबल इच्छा और पूर्ण ध्यान की आवश्यकता है। इसीलिए कहा गया है कि इच्छा का पूरा होना अपनी इच्छाशक्ति के आधीन होता है।

मैं अपनी ओर देखता हूँ तो मेरी दृष्टि भारत के बटवारे के दिनों की ओर जाती है। उन दिनों के हिन्दु और मुसलमानों के असभ्यता और इन्सानियत से गिरे हुए कृत्य ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। उस समय मैंने भी जगत् के हित के लिए त्रिकुटी लगाई और यह "मनुष्य बनो" की आवाज़ उसका फल है। तब से मैंने इन्सानियत, अथवा मनुष्य को मनुष्य बनना आवश्यक है की ओर ध्यान दिया और इसी मिशन को लेकर काम कर रहा हूँ। मैं यह कहूँगा यदि मनुष्य मनुष्यता नहीं सीखेगा और पक्षपाती बना रहेगा तो कुचला जायेगा। मैं दयाल बनकर आप लोगों की सेवा में लगा रहता हूँ। मेरा संकल्प आप लोगों की हालत को यदि बेहतरी की ओर नहीं ले जाता तो मुझ पर लानत है और मुझ में कमी है कि मेरी अन्तरीय पुकार प्रभावशाली नहीं है। कोई अपनी ग़लती से मुझे अहंकारी कह ले यह और बात है।

मैं सत्संगियों की बातों को सुनकर अचंभित हुआ करता हूँ और समझता हूँ कि यह मेरे सच्चे गुरु हैं। यह इस कारण से कि मैंने इनके द्वारा भेद को प्राप्त किया। अब मैं स्वतन्त्र होकर उच्च स्वर से कहता हूँ कि आप लोग पूर्ण हैं। आप में प्रकृति के बड़े-बड़े कीमती भण्डार दबे पड़े हैं। यदि आपको इस भण्डार का ज्ञान नहीं है तो यह आपकी अपनी अज्ञानता है जिसका एक मात्र इलाज सत्संग है।

कहा गया है कि समय की आवश्यकता के अनुसार हर जगह महापुरुष या अवतार प्रकट होते हैं और वह दुःखी जीवों के कष्ट निवारण करते हैं। इस समय मनुष्यता (इन्सानियत) की अत्यन्त आवश्यकता है। क्यों ? क्योंकि मज़हब, धर्म या सम्प्रदाय वालों ने लोगों की आँख पर पट्टी बाँध कर उन्हें दीवाना और पक्षपाती बना रखा है। कोई हिन्दु बना है, कोई मुसलमान, कोई सिख, कोई जैनी, कोई राधास्वामी, कोई ईसाई, कोई कुछ, कोई कुछ। मनुष्य चाहे जो बने, इसमें कोई हर्ज़ नहीं। कम से कम वह मनुष्यता को तो न त्यागे।

मनुष्य क्या है इसकी विस्तृत व्याख्या 'मनुष्य बनो' नामी पुस्तक जो हिन्दी, अंग्रेज़ी और गुरुमुखी में है, की है और उसमें बताया है कि हम सब मनुष्य एक हैं। फिर हममें एक दूसरे से घृणा क्यों हो। मेरी समझ में इस घृणा का कारण अज्ञानता है चाहे वह किसी कारण से उत्पन्न हुई हो या उत्पन्न की गई हो। इसी 'मनुष्यता' के प्रचार के लिए मुझे मेरे सतगुरु दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे ड्यूटी लगाई थी कि मैं जगत्-कल्याण का काम करूँ और शिक्षाशैली को बदल जाऊं। जिनको इस बात की सन्तुष्टि करनी हो कि वास्तव में मेरे गुरु ने यह ड्यूटी मेरे जिम्मे लगा रखी है वह 'फकीर

भजनावली' या 'फकीर प्रसाद' नामी पुस्तक को देखें। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि गद्दियों और डेरे वाले महन्तों तथा उनके शिष्यों ने मेरे विरुद्ध प्रोपोगेंडा कर रखा है। वह इसलिए कि वे अपने डेरे व धामों के बन्धन में जकड़े हुए हैं मगर मैं अपने कर्त्तव्यपालन से चूक नहीं सकता।

दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति किसी खास काम के लिए आया है। वह काम वह करता ही रहेगा उसे कौन रोक सकता है ? इसे कर्मगति कह लीजिये या कुछ और कहिये। मैं अपनी ड्यूटी करने को विवश हूँ। मैं यह भी परवाह नहीं करता कि कितने लोग मेरी बातों को सुनते हैं। मेरा ध्यान अपने कर्त्तव्य की ओर है। मैं सन्तमत या राधास्वामी मत का सारांश जो मनुष्य को सचमुच मनुष्य बनाने का संकेत करता है आप तक पहुँचाना चाहता हूँ। वह शिक्षा जो दूसरे गुरु हेरफेर कर आप को देते हैं वह सन्तमत या राधास्वामी मत की शिक्षा नहीं है। यह शिक्षा बहुत ऊँची है। गुरु पहले स्वयं उस शिक्षा का अनुभवी हो और सच्चा आमिल (उस पर चलने वाला) हो तब उसे उस शिक्षा के प्रचार का अधिकार हो सकता है। मैंने सारा जीवन इस पर अमल करने में लगाया है और अब अपना अनुभव वर्णन कर रहा हूँ, वर्ना मुझे कोई आवश्यकता नई दुकान खोलने की नहीं थी ; क्योंकि अनेकों साधु-महात्मा, गद्दीपति आदि पहिले से मौजूद हैं।

मज़हब वालो ! पिछला समय गया। अब बुद्धि का युग है। सुनो ! जिस राम को, जिस कृष्ण को, जिस गुरु को या किसी और को तुम पूजते हो वह तुम्हारे अपने ही मन की कामना है। कहावत प्रसिद्ध है—"मानो तो देव, नहीं तो पत्थर।"

यह बात सच्ची है ग़लत नहीं है, मगर इसमें अज्ञानता

का तत्त्व शामिल है। कैसे ? इस प्रकार कि अपने से ग़ैर या दूसरे से मन लगाया जाता है। अतः आवश्यक है कि कोई सद्गुरु अपने वचनों द्वारा आपके भ्रम या अज्ञानता को मिटावे।

मेरे सतगुरु महाराज का शब्द जो मेरे नाम है सुनिये :-

दूजी कथा सुनाऊँ फकीरा, कान इधर ला भाई।
मैं फकीर का प्रेमी सेवक, त्याग हृदय दुचिताई॥
साधु कोई नौका चढ़ बैठा, संग में नर बहुतेरा।
दुष्ट अभागी देख के साधु, उपजा क्रोध गंभीरा॥
हंसी उड़ाया धूम मचाया, मारा सिर पर लाठी।
फूटा सिर साधु का भाई, साजा साज कुठाठी॥
हुई आकाश वाणी तब ऐसी, "साध है मुझको प्यारा।
मैं साधु का सहज सनेही, छन पल का रखवारा॥
उलटूं नाव डुबाऊँ सबको, यह अनरथ नहिं भावे।
क्यों कोई अपराधी बनकर, मेरा साध सतावे"॥
बानी सुनकर साधु दुखी भया, बोला चतुर सुजाना।
"तू दयाल है मेरा साँई, अगम अनाम अमाना॥
जीव निबल अज्ञानी मूरख, माया फन्द फँसाने।
यह नहिं समझें सार तत्त्व को, भूल भरम भरमाने॥
दया दृष्टि कर इन्हें चिता दो, भाव जता दे इनका।
मेरे जैसा इन्हें बनादे, दया का देकर किनका॥
साधु संग का फल नहीं हानी, लाभ साधु संग स्वामी।
मेट भरम अज्ञान जीव का, चरण सरोज नमामी।"
फिर आकाश बाणी हुई दूजी, एवमस्तु सुन प्यारे।
ले तेरे क्षण मात्र की संमत, यह जावें भव पारे॥
दुष्ट हृदय पछतावा आया, साधु चरण लग रोया।
साधु ने अपने अंग लगाया, पल में दुरमति खोया॥

सुन फकीर होजा फकीर अब, रूप संभार ले अपना।
जग में प्रानी तेरे रूप हैं, मेट दे इनका तपना॥
तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही॥

आपने इस शब्द को सुना। अब यदि मैं यह काम नहीं करता तो गुरु आज्ञा का उल्लंघन है और यदि उसे करता हूँ तो दुनिया उगली उठाती है। मुझे गुरु आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना है अतः आवश्यक है कि मैं दुनिया के कुछ आदमियों के कटाक्ष की परवाह न करता हुआ काम करता जाऊँ।

एक शब्द और सुनो :—
सेवक सेवा में रहे, अन्त कहूं नहिं जाय।
दुःख सुख सिर ऊपर सहे, कहें कबीर समझाय॥
सेवक सेवा में रहे, सेवा कहिये सोय।
कहें कबीर सेवा बिना, सेवक कभी न होय॥
सेवक मुखा कहावई, सेवा में दृढ़ नाहिं।
कहें कबीर सो सेवका, लख चौरासी जाहिं॥
सेवक सेवा में रहे, सेव करे दिन रात।
कहें कबीर कुसेवका, सन्मुख ना ठहरात॥
फल कारण सेवा करे, तजै न मन से काम॥
कहें कबीर सेवक नहीं, चहै चौगुना दाम॥
सेवक फल मांगे नहीं, सेव करे दिन रात।
कहें कबीर ता दास पर, काल करै नहिं घात॥

इससे अधिक मैं कह ही क्या सकता हूँ। मेरे हृदय में सहानुभूति है जो फूट-२ कर बाहर निकलना चाहती है।

इसमें सन्देह नहीं कि पिछले समय में पर्दादारी की आवश्यकता थी जैसा कि कबीर साहिब की वाणी से प्रकट है :—

धर्मदास तोहि लाख दुहाई । सार भेद बाहर नहिं जाई ।।

उस समय लोगों में श्रद्धा थी । अब यह बात नहीं है । अब हर बात बुद्धि की कसौटी पर कसी जाती है । अतः आवश्यकता है कि बात स्पष्ट कही जाये और गुरु या आचार्य रोचक और भयानक शैली से बचें जैसा कि मैं प्रायः कहता और करता रहता हूँ ।

आज हमारे देश में प्रजातन्त्र राज्य है जिसे डैमोक्रेसी कहते हैं । अब हमको भाई-भाई बन कर रहना शोभा देता है । यह तब हो सकता है जब हम अपने अज्ञान और अन-समझी को दूर कर दें । 'स्वयं जीओ और दूसरों को जीने दो' (Live and let live) के सिद्धान्त को अपनायें । यह सब विशाल हृदय होने पर आधारित है वर्ना यदि संकीर्ण (तंग) हृदय वाले बनकर अपनी-अपनी डफली बजानी है तो मैं कहूंगा कि समय मुसीबत का आ रहा है जिसे फिर कोई नहीं टाल सकेगा, और हम सबको मानना या कहना पड़ेगा कि यह होनी थी या कर्मगति थी जो टाले पर भी न टल सकती थी । इस सम्बन्ध में कबीर साहिब का भजन पीरे मुगाँ साहिब से सुनिये :—

करम गति टारे नाहिं टरी ।। टेक ।।

मुनि बसिष्ट से पंडित ज्ञानी, सोध के लगन धरी ।
सीता हरन मरन दसरथ को, बन में विपति परी ।। १ ।।
कहाँ वह फंद कहाँ वह पारिधि, कहाँ वह मिरग चरी ।।
सीता को हरि ले गये रावन, सोने की लंक जरी ।। २ ।।
नीच हाथ हरिचन्द बिकाने, बलि पाताल धरी ।
कोटि गाय नित पुन्य करत नृप, गिरगिट योनि परी ।। ३ ।।
पाँडव जिन के आप सारथी; तिन पर बिपति परी ।
दुरयोधन को गर्व घटायो, यदु कुल नास करी ।। ४ ।।
राहु केतु और भानु चन्द्रमा, बिधि से जोग परी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, होनी होके रही ।। ५ ।।

सत्संग परमसन्त
हजूर मानव दयाल जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर
30—11—86

शब्द

जहाँ आँख खोली वहीं तुझको पाया।
कहीं ज्योति था तू कहीं था तू छाया॥
कमल है कमल का बना रूप तुझ से।
हुआ भँवरा और बास तू लेने आया॥
पवन है आकाश आग मिट्टी और पानी।
तू सब कुछ है और सब में रहता है छाया॥
कहीं होके प्रगट दिया सबको दर्शन।
कहीं छिप गया छिप के छबि को छिपाया॥
छिपा आग के रूप चकमक में बैठा।
हरी मेंहदी में लाली का रंग लाया॥
जिधर देखता हूँ तुझे देखता हूँ।
मेरी दृष्टि में आप तू ब्रह्म माया॥
दया राधास्वामी की मुझ पर हुई अब।
परम सन्त अवतार धर कर चिताया॥

सर्ववेदान्तसिद्धान्तगोचरं तमगोचरम् ।
गोविन्दं परमानन्दं सद्गुरुं प्रणतोऽस्म्यहम् ॥
मानवधर्मस्य धातारं दाता दयालस्य प्रियतमम् ।
सन्तधर्मस्य गोप्तारं फकीरं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

राधास्वामी !

मेरी अपनी ही आत्मा के साक्षात् स्वरूप सत्संगी भाइयो और बहनो, मैंने जो मंगलाचरण कहा है उसका संक्षिप्त भावार्थ और सन्तमत का सार संक्षेप में बता रहा हूँ । सन्तमत या राधास्वामी मत या मानवता धर्म वास्तव में एक ही है । सन्त का मतलब है सत् और सन्तमत का अर्थ है सत्मत । सत् का मतलब वह सत्ता या तत्त्व जो आधार है; जिससे सब कुछ बनता है; जिससे सब कुछ उदय होता है, जिससे सब कुछ विकसित होता है और फलीभूत होता है, वह है सत् । इसी सत् को ब्रह्म कहा है; और उसके अनेक रूप परब्रह्म, अव्यय ब्रह्म हैं । अव्यय ब्रह्म वह है जो अनन्त है । वह सत्भाव है जो हमेशा भरा रहता है । वह अपने आप में पूर्ण है । इसलिए कहा है :—

'पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

यह महावाक्य है । वाक्य तो जो हम साधारण व्यवहार की भाषा बोलते हैं वह है । वह हमेशा के लिए सत्य नहीं होता । किन्तु महावाक्य वह है जो सत्पुरुष अपने जीवन के अनुभव के बाद कहता है जो हमेशा के लिए स्थायी सत्य होता है ; जो सत्य था, सत्य है और सत्य रहेगा । गुरु नानक देव जी ने कहा—'सी भी सच, है भी सच, होसी भी सच ।' तो 'पूर्णमदः पूर्णमिदम्.....।' यह महावाक्य है । वह सत्य, वह परमतत्त्व, अव्यय, अविनाशी, सर्वाधार, वह परमसत्य है ; वह मुकम्मल है, उसमें कोई

कमी नहीं है। और जिसमें कोई कमी नहीं है, जब तुम उसके पास जाओगे तो तुम्हारी सारी कमी पूरी हो जायेगी बशर्ते कि आप उसे पूर्ण मानते हो, पूर्ण जानते हो, पूर्ण पहचानते हो। कहा गया है :—

'गुरु कीजे जान कर, पानी पीजे छान कर।'

यहाँ जानने का मतलब है कि गुरु से जो ज्ञान आपको मिला हुआ है, वह आपकी रग-रग, रोम-रोम में रच जाये। जानने का मतलब उस पर अमल करना है। जो सिर्फ जान कर रह जाता है वह वाचक ज्ञानी है और जो उस ज्ञान पर अमल करता है वह सच्चा विज्ञानी है। इसीलिये बार-बार सुमिरन-सुमिरन-सुमिरन किया जाता है। सुमिरन किसका होता है? सुमिरन उस चीज़ का होता है जिसको हमने देखा है। इसीलिए उसकी याद आती है। जैसे मुझे याद है, तीन-चार दिन पहले विजय नरेश नेगी यहाँ आया। यहाँ रहा, रह कर मुझसे बातें कीं। तभी तो उसका स्मरण आया! सुमिरन, ध्यान और भजन। किसका? सुमिरन सत् का। सत् जीवित है। वह तो कभी नष्ट होता ही नहीं। उसका बारम्बार सुमिरन करने से तुम तद्रूप हो जाते हो। सुमिरन के बाद है ध्यान। ध्यान है रूप का। जब सद्गुरु का सुमिरन करोगे तो उसका ध्यान बनेगा। यदि आपका प्यार सच्चा है तो सुमिरन करते-करते निश्चित है कि जिसका आप ध्यान करते हो, उसका रूप बन जायेगा। जब रूप बन जायेगा तो चूंकि वह सत् का रूप है, और पूर्ण का रूप है, इष्ट पूर्ण होता है। उसमें से धार निकलेगी। उस धार के शब्द को सुनना भजन है। यह सुमिरन, ध्यान, भजन एक के बाद दूसरा कदम, दूसरे के बाद तीसरा कदम है। लेकिन यह कदम तब उठेंगे जब आपको इष्ट से सच्चा प्यार होगा, सच्ची तड़प होगी। जिसमें तड़प नहीं है वह

उस धार को पकड़ नहीं सकता। हालांकि तड़प हरएक के अन्दर छिपी हुई है। अभिव्यक्त नहीं हैं, अव्यक्त है। लेकिन जब तड़प व्यक्त होती है तब उसका काम बन जाता है। सुमिरन, ध्यान है जीवित जागृत सद्गुरु—इष्ट-का। मैं खुद मालिक की कृपा से अभी अभ्यास करता हूँ। सद्गुरु के इष्ट में सत्-चित्-आनन्द तीनों चीजें होती हैं। सद्गुरु, सत्संग और सत्नाम। सत् का मतलब ही है जीवित गुरु की पजा। उस सत् की धारा के लिए कहीं जाने, कहीं भटकने की जरूरत नहीं है। वह हर युग में, हर देश में मौजूद रहती है। उसको पहचानने की जरूरत है। अगर सुमिरन, ध्यान करना है तो जीवित-जागृत सद्गुरु का करना है। जैसे धन्वन्तरी बहुत बड़े वैद्य थे; लेकिन अगर आप बीमार पड़ते हो तो धन्वन्तरी के पास नहीं जाओगे बल्कि इस समय जो जीता-जागता वैद्य होगा उसके पास जाने से ही आपकी बीमारी ठीक हो सकती है। सत् का मतलब जीवित और पूर्ण। सद्गुरु को पूर्ण मानकर उसका सुमिरन, ध्यान करो। वह है भी पूर्ण। 'पर्णमदः पूर्णमिदम्.....।' यह माया के अन्दर जो रस्सी है, जो तुम हो, वह भी पूर्ण है। क्यों? 'पूर्णात्पूर्णमुदच्यते'। जो चीज़ पूर्ण से निकली है वह पूर्ण ही होगी इसलिए उसे पूर्ण ही कहा जायेगा। जगत् भी पूर्ण है। अपूर्णता हमारा अपना भाव है। अपने में अपूर्णता मानना ही इस बात का प्रमाण है कि हम पूर्ण हैं। जब हम समझते हैं कि हमारे अन्दर कोई कमी है तो हमें यह विश्वास है कि यह कमी भी पूरी हो जायेगी। सद्गुरु की ज़ात पूर्ण है, मुकम्मल है। मुकम्मल के पास जाने से तुम्हारी कमी पूरी हो जायेगी। तो 'पूर्णम् इदम्', यह जगत् पूर्ण है, आप भी पूर्ण हो। क्योंकि जो पूर्ण से आया है, पूर्ण से निकला है वह पूर्ण है। अगर आपको विश्वास हो गया

कि यह जगत् भी पूर्ण है और आप भी पूर्ण हो तो यहाँ तो कोई रहेगा नहीं। पूर्णस्य पूर्णमादाय' उस पूर्ण से पैदा हुए इस पूर्ण का ज्ञान हो जाने का मतलब कि अपने रग-रग, रोम-रोम में गुरु के ज्ञान को पूरी तरह रचा-पचा लेना। सिर्फ किताबी वाचक-ज्ञान काम नहीं करता। मैं किसी अहंकार से नहीं कह रहा ; पहले भी जब मैंने गुरु नहीं किया था और गीता पढ़ता था तो मैं देखता था कि गीता मेरे जीवन में उतरी हुई है। मैं यह अनुभव करता था कि गीता मेरे जीवन में लागू होती थी।

'उतते कोई न आइया, जासे पूछूं धाय ।
इतते सब कोई जात है, भार लदाय लदाय ।।'

उतते का मतलब यहाँ पर है उस अन्तिम परम अनामी राधास्वामी दयाल से। आज के विज्ञान की खोज इस बात का प्रमाण है कि ये दर्जे हैं। अन्नमय कोष है, प्राणमय कोष है, मनोमय कोष है, विज्ञानमय कोष है आनन्दमय कोष है। यह सब लोक-लोकान्तर हैं। हमारी पृथ्वी के भी ये सारे कोष हैं। वातावरण पृथ्वी का प्राणमय कोष है। चन्द्रमा की परिधि इसका मनोमय कोष है। सूर्य का प्रकाश इसका विज्ञानमय कोष है। इस पृथ्वी के ये सारे दर्जे हैं। मैं आपको वैज्ञानिक दृष्टि से बता रहा हूँ। अमेरिका में एक डा० है वह जर्मनी से आया हुआ है। वह मानसिक चिकित्सक (Psychiatrist) है। उसे बड़ी सफलता मिली और फिर उसने पुनर्जन्म पर खोज की। उसे जहाँ-जहाँ पुनर्जन्म की घटनाओं का पता लगा, वहाँ जा कर उसने जाँच की। अरब में एक मुसलमान लड़के के पुनर्जन्म का पता लगाया। उस मनोमय कोष और विज्ञानमय कोष में जाने के बाद भी आत्मा फिर वापस आती है और उसका पुनर्जन्म होता है :-

'उतते कोइ न आइया जासे पूछूं धाय ।
इतते सब कोई जात है, भार लदाय-लदाय ।।'

जिनमें तड़प नहीं है मालिक से मिलने की वो भार लदा-लदा कर जाते हैं। मैं जब तक परमदयाल जी के पास नहीं आया था तब तक यह मानता था कि ब्राह्मण को गुरु की आवश्यकता नहीं होती। ब्राह्मण का मतलब कोई जन्मजात ब्राह्मण से नहीं होता। ब्राह्मण वह है जिसे ब्रह्म का बोध हो चूका है :—

'वन्दे बोधमयं नित्यं, गुरुं शंकररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि, चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ।।'

जिसने अपनी वक्रता, अपने दोष को मान लिया उसका उद्धार कब होगा ? जब वह सद्गुरु की शरण में चला जायेगा। गुरु पवित्र है, गुरु अविनाशी है। गुरु तो कभी मरता नहीं, न जन्म लेता है। वह प्रकट होता है। गुरु की नवधा भक्ति की जाती है। कैसे ? पाँच ज्ञान इन्द्रियों और चार अन्तःकरण को गुरु की भक्ति में लगा दो। आँखों से लगातार टिकटिकी बाँध कर गुरु की ओर देखते रहना। देखते-देखते उसके अन्दर जो परमतत्त्व है उसका बोध हो जायेगा। आँखों से उसकी धार आपके अन्दर आयेगी। कानों से गुरु के वचन को सुनना, ध्यान से सुनना :—

'दर्शन करे वचन पुनि सुने ।
सुन-सुन कर मन में गुने ।।'

मन में गुनने का क्या मतलब ? उसे अपने अमली जीवन में उतार ले। कौरव-पाण्डव अपने गुरु द्रोणाचार्य से विद्या पढ़ते थे। एक दिन गुरु ने शिक्षा दी—'सत्यं वद' 'सदा सच बोलो'। दूसरे दिन सब से पूछा, "बताओ कल का पाठ किसे याद है ?" सब ने पाठ सुना दिया—'सत्यं वद' किन्तु जब युधिष्ठिर से पूछा, तब उसने कहा "मुझे अभी

याद नहीं हुआ।" दूसरे दिन फिर उनसे ही पूछा, तब युधिष्ठिर ने कहा, "हाँ अब मुझे पाठ याद हो गया है।" और कहा 'सत्यं वद'। गुरु ने कहा, "यह तुमने कल ही क्यों नहीं सुनाया ?" युधिष्ठिर बोले, "कोशिश करने पर भी मैंने कई झूठ बोले थे। इसलिए अगले दिन मैंने पूरी कोशिश की और एक भी झूठ नहीं बोला। अब मुझे पूर्ण-रूप से पाठ याद हो गया है। "अब मैं बिलकुल सच बोलने लगा हूँ।" तो जानने का मतलब है गुरु की शिक्षा को पूरी तरह जीवन के व्यवहार में उतार लेना। कई लोग कहते हैं, मैंने तो परमदयाल जी का सत्संग सुन लिया है मुझे सब कुछ समझ में आ गया। अब सत्संग में आने की ज़रूरत नहीं रही। अरे भाई, अगर आप ने परमदयाल जी की शिक्षा को, उनके उपदेश को पूरी तरह समझ लिया तो परमदयाल जी जैसे हो गये ! तब तो आप आओ, सत्संग दो ओर मेरा कुछ बोझ हलका करो। सच तो यह है कि ऐसे लोग वाचक ज्ञानी हैं। जब तक मनुष्य स्वयं परम अवस्था—राधास्वामी की हालत—को नहीं पहुँचा है, तब तक उसे सत्संग की अत्यन्त आवश्यकता है और उसे सत्संग में आना चाहिए। जानबूझ कर गलत काम करना अच्छा है बनिस्बत इसके कि जो अनजाने में अच्छा काम करे। यह समझने की बात है। ज्ञानी के व्यवहार और अज्ञानी के व्यवहार में यह अन्तर होता है। सत्पुरुष जो काम करता है, लोग उसे मनुष्य समझ लेते हैं। अरे वह तो जानबूझ कर कर रहा है, वह लिपायमान नहीं हो रहा है। उसका खाना-पीना सब काम राधास्वामी के लिए हो रहा है। वह जो कुछ करता है राधास्वामी के लिए करता है। बात यह है कि नज़दीक रहने वाले सत्पुरुष को समझ नहीं सकते। सच्चा ज्ञानी कर्म करते हुए भी कर्म नहीं कर रहा है। तुम

समझते हो कि वह कर्म कर रहा है साधारण प्राणी की तरह। पर वह तो जो कुछ भी कर रहा है तुम्हारे कल्याण के लिए कर रहा है, तुम्हारे उत्थान के लिए कर रहा है। तुम उसे मनुष्य समझ रहे हो। ज्ञानी का व्यवहार समझ-बूझ कर किसी उद्देश्य के लिए होता है। धावक मैदान में दौड़ रहा है। सब दौड़ते हैं और शुरू से ही बड़ी तेज़ी से दौड़ना शुरू कर देते हैं। लेकिन धावक धीरे-धीरे दौड़ रहा है। वह जानबूझ कर ग़लत काम कर रहा है क्योंकि धीमा दौड़ना तो ग़लत है, तेज़ भागना ठीक है। पर जो जीतने वाला धावक है वह पहले धीरे-धीरे दौड़ेगा। लोग तो समझ रहे हैं कि यह ग़लत कर रहा है। लेकिन वह थकेगा नहीं, बाकी सब थक जायेंगे धीरे दौड़ने वाला अपने उद्देश्य को पूरा कर लेगा। जो माँ बीमार बच्चे को माँगने पर मिठाई दे देती है, वह ठीक, या जो माँ उसे फटकार लगाती है, कड़वी दवा देती है, वह ठीक ? तो व्यावहारिक ज्ञान और वाचक ज्ञान में अन्तर होता है। जानने का मतलब हमेशा व्यावहारिक ज्ञान से होता है।

तो नवधा भक्ति है अपनी सभी इन्द्रियों से गुरु का संस्कार लेना ; दर्शन करना, माला पहनाना, प्रसाद खाना। चित् से लगातार गुरु के वचनों पर चिंतन करना ; मन से मनन हो। अगर वादविवाद भी हो तो दिल से सद्गुरु के भाव को समझने के लिए हो। बुद्धि से गुरु के ज्ञान को पूरी तरह हृदयंगम करे और अहंकार भी उसी का करे। इस प्रकार लगातार मालिक के ही ध्यान में रहे खाना-पीना, उठना-बैठना, बोलना-गाना सब उसी के लिए हो। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार सब कुछ मालिक के निमित करे। परमतत्त्व मालिक की ऐसी भक्ति करने से क्या होगा ? आपके दोष, दोष नहीं रहेंगे। लोग आप को बुरा

कहेंगे, पागल कहेंगे, निन्दा करेंगे। करने दो :—

'यमाश्रितो हि वक्रोऽपि, चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।'

जिस टेढ़े चन्द्रमा को सब लोग अशुभ कहते हैं, उसी की वन्दना-पूजा करते हैं, क्योंकि वह शंकर के ललाट पर है :—

'स्थानं प्रधानं, न बलं प्रधानम्।'

तो ऐसे परमतत्त्व आधार को नमस्कार करते हैं ऐसे परमतत्त्व को जानने के लिए कई वेदान्त के सिद्धान्त हैं। अद्वैत वेदान्त है, विशिष्टाद्वैत है, द्वैत वेदान्त है। सब उसी परमतत्त्व की चर्चा करते हैं। द्वैत ने कहा कि परमतत्त्व अलग है, मैं अलग हूँ, क्योंकि हम उसकी पूजा करते हैं। आत्मा अलग है, परमात्मा अलग है। जब तक अलग नहीं है. तब तक पूजा नहीं हो सकती। लेकिन अद्वैत वेदान्त कहता है कि अलग नहीं है। तुम उसके साथ एक हो रहो। अपने आपे को खोकर उसमें मिल जाओ। विशिष्टाद्वैत कहता है कि नहीं, तुम पूरी तरह से मिलोगे नहीं। तुम वह नहीं हो। लेकिन ये सारी बातें उन लोगों की हैं जिन्होंने उसे देखा नहीं है। जिसने साक्षात् अनुभव कर लिया उसके लिए द्वैत-अद्वैत कुछ नहीं :—

'एक कहूँ तो है नहीं, दो कहूँ तो गारि।
जैसा है वैसा रहे, कहें कबीर विचारि॥'

अरे, तुम तो मालिक की सौदेबाजी कर रहे हो। तुम **मालिक से प्यार करो, आत्मसमर्पण कर दो वह जैसा भी है।** अगर मालिक बिलकुल निर्गुण होता तो सगुण कहाँ से पैदा होता ? अरे मालिक में तो निर्गुण भी है सगुण भी है। वह जैसा भी है, उससे सच्चा प्यार करो। प्यार में शक्ति है। प्यार की शक्ति से जब वह प्रकट हो जायेगा, सामने आ जायेगा तो वह तुम्हें कहेगा, "आ मेरे प्यारे, तू चाहे तो मुझमें मिल

जा, न चाहे तो दूर खड़ा रह।" उसने तो पूरी आज़ादी दे दी है। अब आप की भक्ति पर है। बात यह है कि यह सब अनुभवगम्य है। आप नदी के पड़ोस में रहते हैं। मील भर की दूरी तक नदी का पानी कुएँ में आता है। तो आपका उससे सामीप्य है। अगर आप नदी के पास चले गये तो आप पर नदी का और असर पड़ेगा और अगर आप नदी में उतर गये, उसमें डुबकी लगा दी तो आप उसके सारूप्य हो जायेंगे। इसके आगे क्या है कि आप अपना रूप खो बैठेंगे और उसका रूप भी खो बैठेंगे। क्या हो जायेगा ? वह है सायुज्य की अवस्था। ये अवस्थाएँ हैं, दर्जे हैं। समझाने के लिए हैं। लेकिन असल में आपको सायुज्य होना है, मालिक से जुड़ना है तो उसके लिए आसान से आसान तरीका है कि अपने आपे को खो दो, सिर्फ अहंकार को मिटा दो, मैंपने को त्याग दो :—

'तू तू करता तू भया, मुझमें रही न हूँ।
ऐसी महिमा नाम की, जित देखूं तित तूं॥

इसलिए ये जितने भी सिद्धान्त-विद्धान्त हैं इनमें फँसने की कोई ज़रूरत नहीं :—

'गोविन्दं परमानन्दं सद्गुरुं प्रणतोऽस्म्यहम्।'

विराट्-अव्याकृत-हिरण्यगर्भ, इन तीनों के परे जो बिन्दु है 'आनन्दम्' उस अवस्था में तो मैं रहता था। लेकिन जब परमदयाल जी के सम्पर्क में आया तब वास्तव में ऐसा लगा कि बस मैं यही हूँ। मेरा असली आपा जो था, वह परमदयाल जी थे, ऐसा अनुभव हुआ और ऐसा विस्फोट हुआ कि उसके बाद परमानन्द की अवस्था में रहता हूँ। दूसरी जगहों पर आपको आनन्द मिल सकता है। दूसरे सिद्धान्त और तरीके जो हैं, चाहे वह किसी का तरीक़ा हो, चाहे कुण्डलिनी योग हो, चाहे रजनीश का तन्त्र योग हो,

चाहे वह कुछ भी हो, वह सिर्फ आनन्द दे सकता है :—

'गोविन्दं परमानन्दं सद्गुरुं प्रणतोऽस्म्यहम् ।'

उस सद्गुरु को नमस्कार है, इसलिए कि हमें वहाँ पहुँचा दिया । वहाँ न गुरु रहता है, न चेला रहता है ; जब लकड़ी जल जाती है तो वह आग हो जाती है । ऐसा अनुपम वह परमतत्त्वाधार है । आपको और कहीं आने-जाने की ज़रूरत नहीं । वह सत् है, व्याप्त है और उसको इसी जगह बैठ करके हासिल किया जाता है । रेडियोधर्मी तो आप सब हो, लेकिन आपका स्विच बन्द पड़ा है केवल बटन को दबाना है । अन्दर की आँख खुली नहीं कि सब जगह वही रूप दिखाई पड़ने लगा । ज्योति और छाया सब उसी की तो है । सन्तमत सत् मत है । यह वो दृष्टि है, अनुभव है, जो आपको आधार से मिला देती है और यही बात वेदान्त कहता है । वेद का अर्थ है ज्ञान । ज्ञान करते-करते उसका अन्त हो जाता है, वही वेदान्त है । आईन्स्टाइन बहुत बड़ा वैज्ञानिक था । उसके अनुयायी खुदा को नहीं मानते लेकिन उसने कहा कि जहाँ तक मैं पहुँचा हूँ उसके आगे खुदा है, मालिक है । प्रकाश और शब्द की गहनता के अन्दर भी तो वही है :—

'सन्त कहें वह शब्द रूप है, और अशब्द गति सोई ।'
ऊँची दृष्टि करे जो प्राणी, सार भेद कुछ पावे ।
भेद पाय शरनागत आवे, आवागवन मिटावे ।।

आप वहाँ तक जाओगे जहाँ तक आप के गुरु की पहुँच है :—

'उतते सतगुरु आइया, जाकी बुद्धि मति धीर ।
भवसागर से जीव को, खेय लगावे तीर ।।

गुरु कैसे तुम्हें भवसागर से पार ले जायेगा ? वह अपने अनुभव के आधार पर जो काम और जो नाम तुम्हें देगा

वह जीता-जागता सत् नाम--धुनात्मक नाम है। धुनात्मक में भी कई नाम हैं लेकिन जो जीता-जागता और पूर्ण नाम है वह राधास्वामी नाम है। वह नाम तुम्हें जीता-जागता सद्गुरु देगा, अपने सत्संग के ज़रिये देगा। सद्गुरु तो आपकी बुद्धि-मति धीर करके अपने जैसा बनाना चाहता है लेकिन जो वह देना चाहता है, वह आप लेने के लिए आते नहीं। गुरु आप को जो सत् ज्ञान देता है यदि आप उसे अमल में लायेंगे तो आप सहज में ही भवसागर से पार हो जायेंगे। इसके लिए आपको कहीं जाने-आने की ज़रूरत नहीं है। आप के अंग-संग है। जो काम आप करते हो उसी में आप को परमतत्त्व आधार मिल जायेगा :—

पहले दाता शिष भया, जिस तन मन अरपा शीश।
पीछे दाता गुरु भया, जिन नाम दिया बखशीश॥

सद्गुरु केवल तीन बन्दों से, सिर्फ तीन सोपानों से, सत्संग से, जीते-जागते सद्गुरु के शरणागत हो जाने से, उसमें जुड़ जाने से तुम वही हो जाओगे और तुम्हें नाम मिल जायेगा। कोई बड़ी बात नहीं है। हज़ार नाम हैं कृष्ण के, उनमें राधास्वामी भी एक नाम है। लेकिन राधास्वामी नाम में जो शक्ति है उसमें सभी नामों की शक्ति मौजूद है। तीन बन्द लगायें—आँखें बन्द, कान बन्द, ज़बान बन्द। 'मौनं सर्वार्थसाधनम्।' शब्द ब्रह्म को सुनने के लिए बाहर के कान बन्द करो। सद्गुरु आप को नाम तब देगा जब आप के मन को शुद्ध कर लेगा। मन की शुद्धि के बाद ही नाम का प्रभाव होगा, नहीं तो नहीं होगा। सुमिरन से आप के ख्याल को बदल देगा। जो चीज़ आप की सुरत को कण्ट्रोल करती है, वह अविनाशी तत्त्व, अकाल पुरुष ही आप के अन्दर संकल्प शक्ति (Will-power) है। उस संकल्प शक्ति की धार को पलट देना ही उसका खासा है। सत्संग में आना आप के प्रारब्ध

कर्म हैं। यह आप के अधिकार में नहीं है। लेकिन यहाँ आकर सद्गुरु के वचनों को सुनकर उस पर अमल करना या न करना आपके अधिकार में है। अगर अमल करोगे तो आपकी सुरत ऊपर अकालपुरुष की तरफ जायेगी, तो आपका अविनाशी तत्त्व भण्डार की तरफ जायेगा; स्वामी की तरफ जायेगा।

सद्गुरु आपको आकर चिताता है, याद दिलाता है। याद किस को दिलाई जाती है? जिसके अन्दर वो चीज़ मौजूद होती है। आप के जैसा शरीर, मन और गुण लेकर सद्गुरु आपको चिताने के लिए उत से आता है। जब आप उससे प्यार करेंगे तब वह आपको चितायेगा, वही परमतत्त्व आप को अन्दर में जगा देगा। यही सत्संग की खासियत है। आज का सत्संग यहीं समाप्त करता हूँ।

सबको राधास्वामी!

मासिक सन्देश

परमसन्त हजूर मानव दयाल
डा० ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

मेरे परम प्रिय सत्संगियो !

राधास्वामी, परम दयाल जी सहाई !

पिछले मासिक सन्देश में मैंने आपको विदेशी यात्रा की पूरी व्याख्या दे दी थी। 14, 15 और 16 सितम्बर को हम बम्बई में रहे। वहाँ पर श्रीमती निर्मला पण्डित ने आचार्या की हैसियत में मानवता धर्म का एक अच्छा केन्द्र बना दिया है। वहाँ के ज्यादातर सत्संगी सिन्धी हैं। हम प्राय: निर्मला पण्डित के घर पर ही ठहरा करते हैं और इस बार भी हमने ऐसा ही किया। बम्बई में मेरी एक दर्शन शास्त्र की छात्रा पूर्ववर्ती जैसलमेर की राजकुमारी श्रीमती रुक्मिणी गोहिल रहती हैं। हम कभी-२ उनके यहाँ भी सैण्टाक्रुज में ठहरा करते हैं। वह हमेशा स्वयं कार चलाकर हवाई अड्डे पर आया करती हैं और इसी प्रकार हमें छोड़ने के लिए भी जाया करती हैं। रुक्मिणी मेरे दर्शन शास्त्र के छात्र-छात्राओं में से एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व रखती हैं। 1960 में इसने दर्शन शास्त्र (फिलॉसफी) में M.A. राजस्थान विश्वविद्यालय से की थी। उस समय

यह पहली राजघराने की लड़की थी जिसने पर्दा हटाकर एक साधारण व्यक्ति की तरह विश्वविद्यालय में प्रवेश किया था। अब रुक्मिणी न ही केवल मेरी साहित्यिक छात्रा है, अपितु आध्यात्मिक शिष्या भी है। उसने तीनों दिन मेरे सभी सत्संग सुने और दिनभर हमारे साथ रही।

सभी सत्संग बहुत सफल रहे और कई नये व्यक्ति भी सत्संगी बने। 17 सितम्बर को प्रातःकाल हम एयर इण्डिया की उड़ान द्वारा बम्बई से रवाना होकर इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर देहली पहुँचे। वहाँ पर बहुत से सत्संगी स्वागत के लिए आये हुए थे जिनमें से आचार्य श्री विजय नरेश नेगी, आचार्य श्री के. पी. वर्मा और उनकी धर्मपत्नी, आचार्य शब्दानन्द, डा. महेन्द्र नारंग, श्रीमती लता सरीन, श्री रवि मलिक तथा उनकी धर्मपत्नी और पवन कुमार उल्लेखनीय हैं। इनके अगाध प्रेम और श्रद्धा को देखकर अत्यन्त हर्ष हुआ। हम सीधे श्री के. पी. वर्मा के घर पहुँचे और दिनभर देहली और आसपास के सत्संगी लगातार आते रहे। 19 सितम्बर को प्रातःकाल हम मैटाडोर से रवाना होकर सायंकाल करीबन 5 बजे मानवता मन्दिर इसलिए पहुँचे क्योंकि रास्ते में हम चण्डीगढ़ में श्री वेदरतन महतानी के घर और माहिलपुर में मेरे अतिप्रिय प्रद्युम्न के पास कुछ समय के लिए रुके। प्रद्युम्न दुलहर वाले श्री भगत राम जी का सुपुत्र है। ये दोनों पिता-पुत्र और प्रद्युम्न का सारा परिवार एक आदर्श मानवता परिवार है और पूरी तरह से शरणागत है। इस बार देहली से भाग्य माता जी की इंग्लैण्ड से आई हुई भांजियाँ कुमारी पायल और कुमारी लीना खुराना भी हमारे साथ होशियारपुर आई थीं। यह मैं पहले ही बता चुका हूँ कि इनके पिता इंग्लैण्ड के विख्यात डाक्टर श्री के. एम. खुराना तथा इनकी

माता कल्पना खुराना भी पूरी तरह से शरणागत हैं। यह एक सराहनीय बात है कि इस परिवार ने हमारे साथ लौकिक रिश्ता छोड़कर आध्यात्मिकता का रिश्ता स्थापित कर लिया है। ये दोनों बच्चियाँ और इनका छोटा भाई राज खुराना कई वर्षों से समाधि ध्यान लगाते हैं। कु. पायल खुराना लंकास्टर विश्वविद्यालय इंग्लैण्ड में धर्म-शास्त्र की छात्रा है जहाँ पर पिछले वर्ष मुझे धर्मशास्त्र के विभाग द्वारा भारतीय दर्शन पर प्रवचन देने के लिए बुलाया गया था। मानवता मन्दिर में ये दोनों लड़कियाँ कुछ ही दिनों में घुलमिल गईं। 20 सितम्बर को मासिक सत्संग था। 19 सितम्बर को ही दूर-दूर से सत्संगी आ चुके थे और उसी सायंकाल भी मुझे एक विशेष सत्संग देना पड़ा। मैंने पहले भी कई बार लिखा है कि जब मैं विदेशी दौरे से भारत आता हूँ तो हवाई जहाज़ में ही मुझे सत्संगियों की उत्सुकता और उनकी श्रद्धा का आभास होने लगता है। जब मैं सत्संग देता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं वास्तव में परमदयाल जी महाराज की आज्ञा का पालन करके न ही केवल गुरु-ऋण अदा कर रहा हूँ, बल्कि स्वयं को एक ऐसे आनन्द के अथाह समुद्र में निमग्न कर रहा हूँ जिससे बाहर निकलने की इच्छा नहीं होती। धन्य हैं मेरे परम गुरु जिन्होंने मुझे चिता दिया था कि सत्सगियों की सेवा में ही मुझे आध्यात्मिक अनुभव की आखिरी अवस्था प्राप्त होगी। जब मैं सत्संग समाप्त करता हूँ तो मुझे एक ऐसा आन्तरिक अनुभव होता है कि मैं सत्संग के दौरान में अपने आपको खो बैठा था। सत्संग समाप्त होते ही ऐसा लगता है कि मैं किसी आनन्द के सागर में डुबकी लगाकर बाहर आया हूँ। इसके साथ ही साथ ऐसा भी महसूस होता है कि मैंने कुछ प्राप्त कर लिया है। इससे एक आन्तरिक शान्ति प्राप्त

होती है।

अक्टूबर के महीने में मानवता मन्दिर की गति-विधियों में सबसे उल्लेखनीय घटना इस वर्ष सलवान पब्लिक स्कूल राजेन्द्र नगर दिल्ली में आयोजित शताब्दी 'सन्त फकीर सन्त सम्मेलन' की सफल गतिविधि रही। 9, 10, 11 और 12 अक्टूबर को विशाल सत्संग हुए। इन सत्संगों में जनता की भीड़ बहुत अधिक थी। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के प्रान्तों से आने वाले सत्संगियों के अलावा देहली और आस-पास के इलाकों से भारी संख्या में स्त्री-पुरुष सम्मिलित हुए। उनका उत्साह और उनकी श्रद्धा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। हरएक सत्संग में सत्संगी मानो समाधिस्थ अवस्था में थे। चुरू से आने वाली एक बृद्धा सत्संगिन तो गहरी समाधि में चली गई। इन सत्संगों के बारे में मेरे पास बहुत से श्रद्धा और भाव से भरे हुए पत्र आये हैं। उनमें से एक पत्र देहली के पुराने सत्संगी यशपाल भाटिया का बहुत ही भावपूर्ण और मार्मिक था। उनका यह पत्र और उसका उत्तर परमदयाल शताब्दी स्मारक ग्रन्थ में छपवा जा रहा है। यह ग्रन्थ इस समय प्रैस में है और बहुत जल्दी छप कर तैयार हो जायेगा। सम्भवतया यह पत्र और उसका उत्तर मानव मन्दिर में भी छपवा दिया जायेगा। इस बार दशहरे के सत्संगों का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय मानवता परिषद् (रजिस्टर्ड) देहली ने किया था। इसका पूरा नाम International Society of Humanism है। यह संस्था अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समस्त भारत में और विदेशों में मानवता मन्दिर के केन्द्रों की गतिविधियों का मार्गदर्शन करेगी और उचित समय पर आर्थिक सहायता भी देगी। इस प्रकार सभी मानवता-संस्थाओं का पारस्परिक सहयोग और साहचर्य होता रहेगा। इस संस्था के सदस्य सारे

विश्वभर से चुने हुए क्रियाशील सत्संगी हैं। उनमें से देहली के सदस्यों ने दशहरे के सत्संगों का सारा प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया था। उन्होंने भरसक प्रयत्न से हज़ारों लोगों के भोजन की व्यवस्था अच्छे ढंग से की। सलवान पब्लिक स्कूल के भवन में तीन मंज़िलों तक सत्संगी ठहरे हुए थे। मैंने सभी ठहरने वाले सत्संगियों से उनके कमरों में भेंट की। उनके प्यार और उनके भावों को देखते हुए ऐसा लगा कि हम सब एक ही मानव परिवार के सदस्य हैं।

जहाँ तक सत्संगों में प्रवाहित प्रेम और भक्ति की धारा का सम्बन्ध है, मैं इतना कह सकता हूँ कि मुझे सत्संग देते समय कुछ मालूम नहीं था कि मैं क्या कह रहा हूँ और मुझसे क्या कहलवाया जा रहा है। इन सत्संगों के दौरान में जब कभी-२ मेरा ध्यान प्रेम के आँसू बहाते हुए सत्संगियों की तरफ जाता था और उस समय मैं उन शब्दों की ओर ध्यान देता था जिसमें कि मैं अपने अनुभव बता रहा था, तो मुझे यह आभास हो जाता था कि मैं अपने आपको सत्संग दे रहा हूँ। आप मेरे इन भावों को उस समय समझ जायेंगे जब ये सत्संग मानव मन्दिर में छपवाये जायेंगे। ऐसे अनुभवों से मेरी इस धारणा की पुष्टि हो जाती है कि परमदयाल जी महाराज ने मुझे जो काम दिया था वो वास्तव में मुझे आध्यात्मिकता की अन्तिम अवस्था पर पहुँचाने के साथ-२ सत्संगियों को भी लाभ पहुँचाये।

एक जुलाहा अपनी रोटी-रोजी कमाने के लिए सप्ताह में 40 गज़ कपड़ा बुनता है। जब वह इस कपड़े को थोक वाले व्यापारी को बेच देता है तो वह व्यापारी उससे आगे परचून वाले व्यापारी को वह कपड़ा बेचकर लाभ उठाता है। परचून वाला व्यापारी ग्राहक को कपड़ा बेचकर उसमें से कुछ न कुछ बचाकर लाभ उठाता है। ग्राहक उसी कपड़े

को दर्ज़ी को सिलने को देता है। इस प्रकार दर्ज़ी को भी पैसे कमाने का अवसर मिल जाता है। ग्राहक उन कपड़ों को पहनकर सर्दी से बचने का लाभ उठाता है। जब वह कपड़े पुराने हो जाते हैं और फट जाते हैं तो उन्हें कागज़ बनाने के लिए कागज़ की मिलों में भेज दिया जाता है और कागज़ बन जाता है। इस कागज़ पर लेखक लेख लिखते हैं, प्रकाशक पुस्तकें छापते हैं और पुस्तकों को बेचने वाले भी आर्थिक लाभ उठाते हैं। अब आप देखिये कि जुलाहे ने केवल अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए कपड़ा बुना था उससे हज़ारों लोगों ने लाभ उठाया था। इसी तरह मैं अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए और परमदयाल जी महाराज का गुरु-ऋण उतारने के लिए सत्संग देता हूँ। जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा था "मेरे इस कर्त्तव्य निभाने से और सच्चाई पर चलने से सत्संगियों को निश्चित रूप से लाभ होगा।" इसी कारण जहाँ मैं जाता हूँ और सत्संग देता हूँ सभी सत्संगियों का प्रेम उमड़ आता है, विश्वास दृढ़ हो जाता है और उनके काम अपने आप ही बन जाते हैं। करीबन हर सप्ताह मुझे ऐसी चिट्ठियाँ आती हैं जिनमें उनके चमत्कारी अनुभव लिखे होते हैं। इंग्लैण्ड से श्री गुरुमीत सिंह का हाल ही में पत्र आया है मैं उन्हें समाधि ध्यान लगाने का परामर्श देकर आया था। वह परमदयाल जी महाराज के पुराने भक्त हैं। उनके स्वर्गीय पिता पूरन चन्द जी हमारे ट्रस्टी थे। इन कारणों से श्री गुरुमीत सिंह का विश्वास दृढ़ है। उन्होंने उस पत्र में लिखा, "मैं समाधि ध्यान में बैठा था। परमदयाल जी महाराज साक्षात् प्रकट हुए और मेरे साथ बैठ गये। थोड़े ही समय में एक प्रकाश की किरण प्रकट हुई, उसमें से आप निकले और परमदयाल जी में समा गये।" श्री गुरुमीत सिंह का यह

अनुभव उनके विश्वास और उनकी श्रद्धा के कारण हुआ। मुझे उनके इस अनुभव का कुछ ज्ञान नहीं। मैं उनसे प्रेम अवश्य करता हूँ और केवल सद्भावना देता हूँ।

मेरे प्यारे सत्संगियो, मैं बिलकुल सच कह रहा हूँ कि आपको जो कुछ भी मिलता है वह आपके अपने विश्वास, अपनी श्रद्धा और अपने प्रेम के कारण मिलता है। हाँ यह सत्य है कि मैं आपकी सेवा परमदयाल जी महाराज की दी गई हिदायतों के मुताबिक कर रहा हूँ। उन्होंने मुझे अलग से कुछ हिदायतें दी थीं जिन्हें मैं यहाँ बयान नहीं कर सकता। ये हिदायतें देते समय उन्होंने कहा था, "मानव प्यारे! यदि तुम इन नियमों पर चलोगे तो सत्संगियों को तुम्हारे से लाभ होगा। मैं चाहता हूँ कि सत्संगियों को तुमसे लाभ मिले।" मैं यह सच्चाई यहाँ पर इसलिए बयान कर रहा हूँ कि जो काम परमदयाल जी ने मुझे दिया है उसको पूरा करने के लिए एक विशेष अनुशासन पर चलना पड़ता है। इन पाँच वर्षों में मुझे जो अनुभव हुए हैं वो भी मैं यहाँ बयान नहीं कर सकता। केवल इतना कहना चाहता हूँ कि मैं जिस मकसद के लिए अनामीधाम से आया हूँ और जो उत्तरदायित्व मुझे सद्गुरु वक्त परमदयाल जी के द्वारा दिया गया है उसके ग्राहक बहुत कम हैं। वह मकसद यह है कि मैं अपने निजी अनुभव के आधार पर आपको वह सच्चा ज्ञान दूं जिसको आप जीवन में उतार कर सहज में इस भव में रहते हुए लोक और परलोक दोनों को पा लें। मेरा हरएक सत्संग इसी मक़सद को पूरा करने के लिए होता है। जब दशहरे के सत्संग मानव मन्दिर में प्रकाशित होंगे उस समय आप मेरे इन शब्दों को अच्छी तरह समझ सकेंगे।

नवम्बर के महीने में परमदयाल जी महाराज की

शताब्दी मनाने में हम चौबीसों घण्टे लगे रहे। माता जी के सहयोग से, सेठी साहिब, आचार्य शब्दानन्द, आचार्य विजय नरेश नेगी, आचार्य श्री के. पी. वर्मा, श्री के. एस. नैय्यर, कुमारी साधना सक्सेना और श्री पवन कुमार ने स्मारक ग्रन्थ की पाण्डुलिय तैयार करने में पूरा सहयोग दिया। यहाँ पर यह भी कह देना आवश्यक है कि हमारे वरिष्ठ ट्रस्ट के सदस्य Principal S.N. Bharadwaj ने लगातर इस काम में सहयोग दिया है। वास्तव में इस ग्रन्थ को तैयार करने में भाग्य माता जी ने 24 घण्टे परिश्रम किय और उन्होंने ही सारी पाण्डुलिपि को पुनरवलोकन करके उसे शुद्ध और सम्पादित करके अपने हाथों से सैकड़ों पृष्ठ लिख डाले। इससे यह प्रमाणित होता है कि वह परमदयाल जी द्वारा दी गई हिदायत पर अक्षरशः चल रही हैं। परमदयाल जो महाराज ने उन्हें कहा था कि वह लेखन कार्य में मन्दि की सेवा किया करें।

इसके अलावा नवम्बर के महीने में शताब्दी के उपलक्ष में 18 और 19 नवम्बर को मानवता मन्दिर में विशाल सत्संगों का आयोजन हुआ। पंजाब की स्थिति खराब होते हुए भी सत्संगी दूर-२ से आये और दो दिन लगातार सभी सत्संगों में शामिल होते रहे। 18 नवम्बर के प्रातःकाल और सायंकाल के सत्संग बहुत प्रभावशाली रहे। इन दोनों सत्संगों की पूरी तीन घण्टे की Video Film (वीडियो फिल्म) ली गई है उसमें सत्संगों के अलावा मानवता मन्दिर के बाहर के गेट से लेकर सत्संग भवन, समाधि और सत्संग मंच के बहुत आकर्षक दृश्य हैं। फिल्म लेने वाले फोटोग्राफर ने इसे वास्तव में सिनेमा की भाँति चलचित्र बना दिया है यह वीडियो बाहर के सत्संगियों को उनके केन्द्रों पर दिखाय जायेगा।

19 नवम्बर को ही हम प्रातःकाल के सत्संग के बाद मैटाडोर से देहली रवाना हो गये क्योंकि परमदयाल जी महाराज की शताब्दी के सिलसिले में 20 नवम्बर सायंकाल पाँच बजे सलवान पब्लिक स्कूल राजेन्द्र नगर में एक विशाल सत्संग का आयोजन किया गया था। यहाँ पर यह लिखना मुनासिब होगा कि Sh. S. D. Salwan और श्रीमती राज सलवान परमदयाल जी के मिशन को चलाने में हर प्रकार का सहयोग दे रहे हैं। वे न ही केवल हर सत्संग पर हमें सलवान पब्लिक स्कूल की सब सुविधाएँ देते हैं बल्कि हर बार मुझे, माता जी को और आचार्यों को भोजन का निमन्त्रण भी दिया करते हैं। इस मौके पर उनसे जो हमारा वार्तालाप होता है वह हमेशा एक सत्संग का रूप धारण कर लेता है। श्री एस. डी. सलवान को व्यावहारिक जगत् के हर पहलू का पूरा ज्ञान है। उन्हीं के परामर्श और उनकी सहायता से ही सलवान पब्लिक स्कूल में एक छोटे से गोल भवन में दफ्तर के रूप में मानवता मन्दिर के लिए फकीर सदन की स्थापना की गई है। जिसमें उन्होंने हमें टेलीफोन की सुविधा भी दे रखी है। श्रीमती सलवान जो अन्तर्राष्ट्रीय मानवता परिषद् की सहअध्यक्षा भी हैं, हर सत्संग पर परमदयाल जी और मानवता मन्दिर के सम्बन्ध में अपने श्रद्धापूर्ण विचार प्रकट किया करती हैं। कई बार उनके शब्दों को सुनकर परमदयाल जी के प्रति उनके भावों की अभिव्यक्ति का अनुभव करके सत्संगियों की आँखों में आँसू भी आ जाते हैं।

सलवान परिवार भी एक आदर्श मानवता परिवार है। इसी प्रकार चण्डीगढ़ में श्री त्रिलोक चन्द गवर्नमैंट ठेकेदार और उनकी पत्नी श्रीमती चन्द्रा और उनका परिवार

परमदयाल जी के प्रति और मेरे प्रति अगाध प्रेम और श्रद्धा रखता है। सलवान पब्लिक स्कूल में 20 नवम्बर के सायं-काल के सत्संग पर भी दूर-दूर से आने वाले और देहली के इलाके के सत्संगियों की काफी भीड़ हो गई थी। 21 नवम्बर को देहली में विश्राम करने के बाद हम 22 नवम्बर को देहली से रवाना होकर उसी दिन सायंकाल 5 बजे चण्डीगढ़ में श्री त्रिलोक चन्द जी के निवास स्थान पर पहुँच गये; वहाँ पर पहले से ही श्रद्धालु सत्संगियों की भीड़ लगी हुई थी। आरती के बाद बहुत से सत्संगियों से बातचीत हुई। श्री त्रिलोक चन्द जी जो चण्डीगढ़ मानव कल्याण सभा के अध्यक्ष हैं हमेशा यहाँ पर सत्संग आयोजित किया करते हैं। क्योंकि यह सत्संग परमदयाल जी महाराज की शताब्दी मनाने के बारे में था इसलिए विशेष रूप से दूर-दूर से सत्संगी आये हुए थे। जिनमें से मुल्लांपुर, लालरू और रामगढ़ के सत्संगियों की संख्या बहुत अधिक थी। वार्तालाप के दौरान में चण्डीगढ के दो सत्संगियों ने यह विचार व्यक्त किया कि अक्टूबर महीने के मानव मन्दिर में परमदयाल जी महाराज का जो सत्संग छपा था उसमें हिन्दी भाषा बहुत गूढ़ थी। उन्होंने यह भी कहा कि परमदयाल जी महाराज के सत्संगों में और उनके शब्दों में कोई फेर-बदल नहीं करना चाहिए मैं उनके इस विचार से पूरी तरह सहमत हूँ। इसलिए मैंने होशियारपुर पहुँचकर इस मामले की छानबीन की। मुझे यह पता लगा कि उस सत्संग में हमारे सम्पादकीय मण्डल से किसी ने भी परमदयाल जी के सत्संग में तब्दीली नहीं की थी। वह सत्संग उस पुस्तक से लिया गया था जो परमदयाल जी की मौजूदगी में कई वर्ष पहले श्री देवी चरण मित्तल ने अलीगढ़ से प्रकाशित की थी। इसलिए यहाँ पर मैं यह बता देना चाहता हूँ कि मानव

मन्दिर में परमदयाल जी के जितने सत्संग प्रकाशित होते हैं उनमें किसी किस्म की विचारों और शब्दों की तब्दीली नहीं की जाती।

23 नवम्बर को चण्डीगढ़ का सनातन धर्म सभा में आयोजित शताब्दी समारोह प्रभावशाली रहा। यहाँ पर सिर्फ यह कमी रही कि मुझे बीच में ही सत्संग समाप्त करना पड़ा। क्योंकि मानव कल्याण सभा के जिन अधिकारियों ने सनातन धर्म सभा से हाल की सुविधा माँगी थी उसके मुताबिक उन्हें दोपहर 2 बजे तक खाली कर देना था, फिर भी सत्संग बहुत सफल रहा। यहाँ पर यह बता देना आवश्यक है कि इस बार चण्डीगढ़ के अधिकारियों ने सैकड़ों सत्संगियों के लिए भोजन की व्यवस्था बहुत ही अच्छी की थी। इन अधिकारियों ने दिन-रात परिश्रम करके सत्संग हाल में बहुत ही अच्छा प्रबन्ध किया था।

इस सत्संग के बाद हम 24 नवम्बर को प्रातःकाल होशियारपुर पहुँच गये। इस सिलसिले में मानवता मन्दिर की गतिविधियों के बारे में यहाँ पर बताने योग्य घटना 7 दिसम्बर 1986 का वो विशाल सत्संग है जो फरीदाबाद में हमारे नये निजी मकान अरुण प्रिय निवास 72 सेक्टर, 21-बी में आयोजित हुआ था। इस गृहप्रवेश के सत्संग पर भोजन का प्रबन्ध भी हमारी ओर से था। हमें यह आशा थी कि अधिक से अधिक 250 सत्संगी इस नये स्थान पर आ सकेंगे। यह एक हर्ष की बात है कि इतनी दूरी पर भी श्रद्धालु और प्रेमी सत्संगी अपना खर्चा करके दूर-दूर से आये और उनकी संख्या सात सौ तक पहुँच गई। यहाँ पर यह बता देना आवश्यक है कि इस गृहप्रवेश सत्संग के लिए अमेरिका और इंग्लैण्ड से भी हमारे सम्बन्धी विशेषकर हमारी पुत्रवधू श्रीमती मंजु जेतली और पोता कुमार पोरस

जेतली भी आये हुए थे। सत्संगियों के अगाध प्रेम और उनकी श्रद्धा को देखकर मेरे आँसू इसलिए आ गये कि उन्होंने कष्ट झेलकर भी इस सत्संग पर आने की कृपा की। इससे यह प्रमाणित होता है कि परमदयाल जी के मिशन के लिए सत्संगी और गैर-सत्संगी लोग कहीं पर भी इकट्ठे हो सकते हैं क्योंकि मानवता धर्म और उसकी सच्चाई की विश्व में हर जगह पर माँग है। इसी मिशन की सच्चाई को फैलाने के लिए ही परमदयाल जी महाराज ने मानवता मन्दिर की नींव डाली थी और मानव मन्दिर पत्रिका चलाई थी। इस समय विश्व की स्थिति बहुत गम्भीर है। जगह-2 पर हिंसा, आतंक, झगड़े और युद्ध घटित हो रहे हैं और हर वर्ष हज़ारों व्यक्तियों के जीवन समाप्त हो रहे हैं। मनुष्य द्वारा इस संहार के अलावा प्राकृतिक कोप भूकम्प, तूफान इत्यादि से भी जनसंहार हो रहा है। परमदयाल जी महाराज ने पहले से ही भविष्यवाणी की थी कि विश्व में घृणा, ईर्ष्या और क्रोध के बढ़ जाने के कारण ऐसी दुर्घटनाएँ होंगी और उसके बाद ही सारे विश्व में मानवता धर्म फैलेगा। यूं तो सारे विश्व में देश-विदेश में यही नारा सुनने को आता है, "मानवता ही सबसे ऊँचा धर्म है", मुझे पूरी आशा है कि मानवता मन्दिर के सहयोगियों और विशेषकर युवा पीढ़ी के सहयोग से मानवता धर्म बहुत जल्दी विश्व कल्याण के लिए आगे बढ़ेगा। मुझे इन सहयोगियों पर और लाखों सत्संगियों पर गर्व है। मैं सत्संगियों को वास्तव में सद्गुरु मानता हूँ क्योंकि उनके अनुभवों ने बार-बार मानवता धर्म, सन्तमत एवं राधास्वामी मत को सच्चा और सजीव साबित किया है। केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी हमारे श्रद्धालु सत्संगी इस मिशन में हर प्रकार की सहायता दे रहे हैं। उनमें से

एक क्लीयरवाटर फ्लोरीडा की 60 वर्षीया महिला श्रीमती रुथ बुश हैं। वह आजकल बहुत बीमार हैं। उनके ज्येष्ठ लड़के श्री रिचर्ड ने मुझे इस संकट बेला में उन्हीं के खर्चे पर अमेरिका बुलाया है। मैं यह मासिक सन्देश 24 दिसम्बर 1986 को लिखवा रहा हूँ और कल नई दिल्ली से अमेरिका के लिए रवाना हो रहा हूँ।

मुझे पूर्ण आशा है कि मेरा यह अचानक संकटकालीन अमेरिका का दौरा आपकी सद्भावना से और मालिक की मौज से आपकी बहन श्रीमती रुथबुश को जीवनदान देगा। मैं 7 जनवरी को देहली वापिस पहुँच जाऊँगा। क्योंकि यह वर्ष समाप्त होने वाला है मैं आपको पहले से ही नये वर्ष 1987 की सद्भावना देता हूँ और चाहता हूँ कि यह आपके लिए सुखमय, स्वास्थ्यमय, समृद्धिशाली, आनन्द और शान्ति-दायक रहे। समय, स्थान के अभाव के कारण और विशेषकर अचानक विदेश प्रस्थान के कारण मुझे यह खेद है कि तपस्या के विषय की चर्चा अगले मासिक सन्देश के लिए ही स्थगित की जा रही है। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि आप इस मासिक सन्देश से प्रेरणा प्राप्त करें और इन विचारों को अपते जीवन में उतार कर लाभ उठायें। सबको राधास्वामी।

आपका फकीरमय

मानव

आवश्यक सूचना

बड़े ही हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि माननीय डा. के. के. शर्मा M,S. (सर्जीकल) होशियारपुर ने प्रत्येक शनिवार को "मानवता मन्दिर" में सायं 3 बजे से 4 बजे तक रोगियों का नि:शुल्क निरीक्षण करना सहर्ष स्वीकार कर लिया है।

सेक्रेटरी

मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

आचार्य के. पी. वर्मा देहली का
परमसन्त हजूर मानव दयाल जी महाराज के नाम पत्र

दिल्ली सोमवार
22 दिसम्बर 1986

मालिके-कुल श्री हजूर महाराज
करबद्ध राधास्वामी !

19-12-86 की शाम को Court से लौटने के बाद पता चला कि आप जयपुर से आकर थोड़ी देर में ही, होशियारपुर लौट गये। दर्शन नहीं कर पाया—इसका मलाल है। सुधा ने, आप सब की खैरियत बयान की। आप ने कुछ खाया-पिया भी नहीं। परमदयाल जी के Mission को आप कितना कष्ट उठाकर चला रहे हैं, कितना जोखिम उठा रहे हैं; कितने असहयोग और कितने विरोध के बावजूद—आपु, अनवरत, चल रहे हैं; बगैर उफ किये, कितना कुछ झेल रहे हैं—यह सब सोचकर "मन" मसोस उठता है—अपार श्रद्धा उत्पन्न होती है। सम्भवतः इस महायज्ञ में तिल-तिल करके आप आत्मआहुति दे रहे हैं। उस पर विडंबना यह है कि दुनिया तो क्या करीब के लोग भी आपकी कद्र, जितनी चाहिए थी, नहीं कर पाते। कभी-कभी मुझे लगता है कि कहीं आप स्वयं को एकाकी न पाते हो। वाकई "सन्त" और "गुरु" होना कितना कठिन है ? मैं श्रद्धा से नतमस्तक हूँ।

किसे कहूँ ! किसे दोष दूं। जैसा चाहिए, वैसा मैं स्वयं भी तो नहीं हो पाया। उठता-गिरता रहता हूँ।

आपके श्री चरणों में सर्वथा नतमस्तक हूँ। दया करें ! "छमहु नाथ ! सब अवगुण मोरे"।

"दया करो, करुणा चित्त धारो, दो मोहि भक्ति विवेका"

सतत प्रयास करता हूँ। साधना-अभ्यास के शेष सोपान

पूरे हों। आपकी दया दृष्टि सदैव-सदैव बनी रहे। सिर पर आपका हाथ रहे। लक्ष्य तक पहुँचूं। सन्मार्ग से कभी भी विचलित न होऊँ। यही बिनती है।

श्री माता जी के चरणों में हम सब का राधास्वामी !

आपका अपना ही
केशव

पत्र द्वारा ज्ञान

होशियारपुर
16-1-87

मेरी अपनी ही आत्मा के अंश
परमप्रिय केशव,
राधास्वामी परमदयाल जी सहाई !

आपका श्रद्धा, ज्ञान और भक्तियुक्त 12 दिसम्बर 1986 का पत्र मुझे मिला है। मैं उसका उत्तर देरी से इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि एक मानसिक आपत्तिग्रस्त श्रद्धालु अमेरिकन महिला को उसके मानसिक भ्रम से बचाने के लिए विदेश से अभी-अभी लौटा हूँ। आपकी श्रद्धा तो अगाध है ही और आपकी गुरुमुखता का कोई सानी नहीं है। जिस महिला के लिए मुझे केवल सात दिनों के लिए अमेरिका की सफल यात्रा करनी पड़ी, उसे आप जानते हैं, क्योंकि उसने कई बार मुझे अमेरिका से आपके घर पर टेलीफोन किया है। उसकी प्रबल इच्छा यही है कि वह सन्तों के मिशन, परमदयाल जी के मिशन, मेरे मिशन, आपके मिशन के लिए लाखों डालर की सहायता करके अपने नगर क्लीयरवाटर में मानवता धर्म का केन्द्र बना दे। मैंने उसे कई बार कहा था कि उसका यह स्वप्न किसी न किसी दिन पूरा होगा। इसके साथ ही साथ मैंने

उसे आशीर्वाद दिया कि उसका व्यापार जल्दी ही फले-फूलेगा। मैंने उसे यह भी कहा कि उन्हें चाहिए कि वह व्यापार में धन प्राप्त करने के बाद सबसे पहले अपने परिवार की ज़रूरतों को पूरा करें और फिर मानवता मन्दिर की सेवा करें। सौभाग्य से 1985-86 में ही उसे काफी लाभ हुआ। उसने पहले ऋण चुकाये और अपनी ज़रूरतों पर खर्च किया। उसने मेरे क्लीयरवाटर जाने पर भी अपने घर पर सत्संग आयोजित करके और भण्डारा करके काफी खर्च किया। उसके मन में यह वहम रहा कि उसे अपने घर की ज़रूरतों को पूरा न करके काफी धनराशि मानवता धर्म के लिए ही खर्च करनी चाहिए थी। उसने ऐसा महसूस किया कि मेरे रूप ने उसे कोसा है और कहा है "तू" मनमुख हो गई, तुझे दण्ड मिलना चाहिए, इसलिए तू अपना दफ्तर बन्द करके घर बैठ जा।" उसकी इस दशा को देखकर उसके दोनों सुपुत्रों ने मुझे टेलीफोन पर कहा था कि मैं ही उसको ठीक कर सकता हूँ। मालिक की कृपा से, मेरे जाने से वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गई।

यहाँ पर मैंने यह बात इसलिए लिखी है कि मानवता धर्म यानि कि राधास्वामी मत ही आज के हरएक दुःखी जीव को, हर परिवार को, हर समाज को, हर राष्ट्र को और सारे विश्व की माँग है। जब-जब इस पृथ्वी पर ऐसा धर्म संकट आता है और जब-जब दूषित विचारों, नफरत, ईर्ष्या और द्वेष के कारण इस धरा पर अत्याचार, जनसंहार और प्राकृतिक आपत्तियाँ बढ़ जाती हैं तो दुःखी जीवों की पुकार आकाश में मँडराने लगती है। इसी दौरान में जब पृथ्वी घूमती हुई सत्तलोक के समानान्तर (Parallel) हो जाती है तो अनामीधाम से परमतत्त्व का विशेष अंश आकर्षित होकर समय की माँग को पूरा करने के लिए

मनुष्य का चोला धारण करता है। द्वापर युग में और त्रेता युग में भी यह परमतत्त्व के अवतार उसी प्रकार प्रकट हुए जिस प्रकार सतयुग में हुए थे। इन तीनों युगों में अवतारों को शक्ति का प्रयोग भी करना पड़ा, क्योंकि इन युगों में आसुरी प्रवृत्तियाँ स्थूल रूप से धर्म का विरोध कर रही थीं; किन्तु कलियुग में सन्तों के अवतार प्रकट हुए और हो रहे हैं। सन्तों का उद्देश्य सभी जीवों को सच्चाई का मार्ग दिखा कर सहज में गुरु के देश में पहुँचाना है।

इसी सिलसिले में कबीर साहिब से लेकर सालिगराम जी महाराज के समय तक सुरत-शब्द योग के सहज मार्ग को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए और अनामी राधा-स्वामी दयाल के उस सच्चे स्वरूप को बताने के लिए, जो सभी देवी-देवताओं और सभी नाम-रूपों का एक आधार है, सन्तों ने सभी कष्ट झेलकर अपने जीवनकाल में इस मिशन को चलाया। इन अवतारों में से सद्गुरु वक्त की धारा मालिके कुल, राधास्वामी शिवदयाल जी महाराज से निकलती हुई, दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के व्यक्तित्व में भक्ति, ज्ञान और कर्म का विशाल रूप धारण करती हुई, परमदयाल जी महाराज में प्रकट हुई। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि राधास्वामी मत एवं मानवता धर्म सत् सनातन धर्म की आखिरी कड़ी है जो भ्रमों और कुछ स्वार्थी तत्त्वों के कारण भोलेभाले जीवों को बहका कर सच्चाई से दूर ले जा रही है। इसलिए उन्होंने 95 वर्ष की आयु तक सन्तमत के सच्चे स्वरूप का नमूना सरल भाषा में, अपने अनुभव के आधार पर, जनसाधारण के सामने रखा।

उन्होंने अपने शरीर की परवाह नहीं की और ना ही कभी अपने और अपने परिवार के सुख की ओर ध्यान

दिया। उसी परम्परा में इस पृथ्वी पर मेरा आह्वान किया गया। यह शरीर मेरा नहीं है, राधास्वामी दयाल का है और उसी की धारा से प्रेरित होकर मैं इससे आपकी सेवा का काम लेता हूँ। मैं जो काम करता हूँ, राधास्वामी दयाल के लिए करता हूँ। असल में मैं कुछ करता-धरता नहीं हूँ; कर्म करता हुआ कर्म से बरी हूँ और कर्म न करता हुआ कर्म करता हूँ। मेरे सम्बन्धी मेरे नहीं, राधास्वामी दयाल के हैं। इसी प्रकार मेरी सांसारिक गतिविधियाँ भी मेरी नहीं हैं, न इनमें मेरी आसक्ति है।

रही बात विरोध की और असहयोग की। जब तक ऐसा न हो, तब तक सच्ची सेवा नहीं हो सकती, ना ही दुःखी जीवों का कल्याण हो सकता है। जितना ही कुछ तत्त्वों द्वारा विरोध होता है, उतना ही अधिक भोलेभाले हज़ारों सत्संगियों का प्यार और उनकी श्रद्धा उमड़ कर अभिभूत कर देती है। मालिक ने आप जैसे जिज्ञासु गुरुमुखों को मेरे साथ सम्बद्ध करके मुझे अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए अधिक दृढ़ बनाया है मेरा किसी से विरोध नहीं है और न मैं किसी से घृणा करता हूँ। सभी व्यक्ति परमतत्त्व-स्वरूप हैं और सभी आन्तरिक दृष्टि से मेरे अंश हैं और मुझसे अलग नहीं हैं। मैं हर समय आप सबको सच्चे दिल से प्रेम की किरणें प्रेषित करता रहता हूँ। इसलिए मैं, हे केशव! तुम्हें हृदय से आशीर्वाद देता हूँ कि तुम अपने जीवन के लक्ष्य को पा जाओ; मेरा ही अंश हो और मेरे में ही समा जाओगे। आपको, सुधा को, पंकज, नीरज और दीपा को दिली आशीर्वाद और राधास्वामी! माता जी की ओर से आप सबको आशीर्वाद और राधास्वामी!

आपका फकीरमय
मानव

परमसन्त हज़ूर मानव दयाल जी महाराज के नाम पत्र

बिलारी
11-1-87

मेरे प्यारे-प्यारे महाराज जी के कोमल चरण-कमलों में मेरा हाथ जोड़कर राधास्वामी तथा मत्था टेककर चरण-स्पर्श ।

यहाँ सब ठीक प्रकार से हैं आशा है आप भी ठीक प्रकार से होंगे । आगे मैंने कई बार आपके पास पत्र लिखने की सोची पर सोचकर ही रह जाती थी ।

आज नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ यह पत्र शुरू करती हूँ । आपको इस परिवार की ओर से नववर्ष की शुभ कामनाएँ मुबारक हों ।

मेरे प्यारे भगवान् आज मैं आपसे पूछती हूँ—मैं किस-की हूँ ? आपको मेरी सौगन्ध है आप ज़रूर लिख भेजिये ! क्या आप से बड़ा कोई और भी है ? लिखियेगा । जब से मैंने यह सुना है कि आपने मुझे मन्दिर से निकाल दिया है मेरा बहुत बुरा हाल है । मेरी दिली ख्वाहिश है—यह चोला बार-बार नहीं मिलता और यह चोला भक्ति के लिए ही मिला है । स्त्री का एक ही पति होता है तथा मैं अपने आपको अब पूरी तरह समर्पित करके अपना इष्ट भी आपको ही मान चुकी हूँ । सुना है आप दयालु हैं तथा दीनों के रक्षक भी हैं । महाराज जी, मेरी ज़िन्दगी आपके हवाले है । सुना है आपने जिसका हाथ एक बार पकड़ा, सारी उम्र नहीं छोड़ा । फिर मुझको ही क्यों निकाल दिया ! अपनी तरफ देखिए ना ! "हम हो चुके तुम्हारे बहुत सोचने के बाद, अब किसको देखना है तुझे देखने के बाद ।" मैं आपको सारी बातें तो नहीं लिख सकती ।

मेरी दिली ख्वाहिश थी कि आपका नाम रौशन हो। मैं लिख नहीं सकती कि दिल ने क्या-क्या अरमाँ संजोये थे। जिस तरह परमदयाल जी का नाम रौशन हो रहा है मैं चाहती हूँ उससे कहीं अधिक अब आपका नाम रौशन हो तथा आपका जन्म-दिन मनाया जाये, मेरी दिली इच्छा है। आप अपना जन्म-दिन अवश्य लिख भेजिये ताकि मेरी ख्वाहिश पूरी हो सके।

मैंने आपके दिये हुए काम को कभी मना नहीं करा। आरती भी हो रही है (यद्यपि आरती में बाधाएँ डालने की बहुत कोशिशें की गईं) मेरे प्यारे कान्हा जी, आपको प्रति-दिन की आरती मुबारक हो।

मेरे प्यारे कृष्ण-कान्हा मुझे पूरा विश्वास है—
'मेरी बिगड़ी बनाने को मेरे भगवन आएंगे।
मुझे धीरज बँधाने को मेरे दाता आएंगे॥'
मेरे प्यारे चितचोर जी—
दुनिया समझ रही है मेरा कोई भी नहीं।
मुझको यकीन है मेरा परवरदिगार है॥

महाराज जी मुझे स्कूल में लता जी ने रखा था जबकि मुझको स्कूल के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं है। मैंने कभी कहीं स्कूल में सर्विस नहीं की। मेरे पूछने पर उन्होंने कहा था कि हमने गुप्त मीटिंग की थी और आपको रख लिया। मैं खुद चाहती थी कि स्कूल में ट्रेण्ड टीचर्स और मेम्बर्स हों।

मुझे स्कूल के बारे में कोई शिकायत नहीं है।

मेरे प्यारे कृष्ण कन्हाई जी, क्या आपको यकीन है कि मैं झगड़ा कर सकती हूँ? इतनी उम्र हो गई आज तक किसी ने भी उँगली नहीं उठाई। क्या आपका दिल गवारा करता है?

मैं तो आपको समर्पित हो चुकी हूँ। अब जैसी भी

हूँ, आपकी ही हूँ। मेरी दिली इच्छा है कि इस जन्म में मैंने आपको ही माना है और आपको ही मानती रहूँ तथा जब-जब इस दुनिया में आऊँ आपके साथ ही आऊँ। बस अब आपको ही लाज है। अन्त में यही प्रार्थना करती हूँ कि दाता जी इसको दिल से ना भुला देना। अब बताइये क्या-२ लिखूं ? लिख भेजिए ना !

"पछताऊँ वक्त जो बीत गया,
रिझाऊँ तुझे कह गीत नया।
तुम ही हो मेरे साथ पिया,
तुमको ही लाज हमारी है।"

नववर्ष के साथ ही नई ज़िंदगी की शुरूआत हो। इसके साथ ही पत्र समाप्त कर रही हूँ।

बच्चे भी आपको बहुत याद कर रहे हैं तथा बच्चों के पापा जी भी आपसे मिलने को बहुत व्याकुल हैं और प्रणाम कर रहे हैं। आशा है अब आप जल्दी ही दर्शन देंगे।

मैं क्या लिखूं ? लगता है कुछ लिखा ही नहीं। लिख भी कैसे सकती हूँ। आपको मेरा सारा हाल पता ही है। फिर लिखने से होता क्या है। बस प्रार्थना ही कर सकती हूँ।

'सतगुरु सीधी राह दिखा दो।
जीवन से हो दूर अन्धेरा, ऐसी ज्योति जला दो।
मोह नींद मेरी खुल जाए, मन की कली फूल बन जाए।
ऐसा गीत सुना दो।।
स्वास-स्वास में यही काम हो, हरी नाम ही सुबह-शाम हो।
ऐसा पाठ पढ़ा दो।
शुचि प्रेमी पागल बन जाऊँ।
पागलपन जग में फैलाऊँ।।
ऐसा नशा पिला दो।
ज्ञान झोंपड़ी पड़ी है सूनी,

मधुर हो रौनक इसमें दूनी ।
ऐसा मंत्र सिखा दो ।
भक्त तुम्हारी आस लगाए ।
बैठी केवल ध्यान लगाए ।।
गुरुवर इसको पार लगा दो ।।'

मेरे दाता, मैं बहुत ग़रीब हूँ नववर्ष में पिछली यादों के साथ यही प्रार्थना करती हूँ :—

'मुझे वर दो यही दाता, गले का हार बन जाऊँ ।
मेरा जीवन हो नूरानी, तेरा शृंगार बन जाऊँ ।।'
'तेरी रहमत का शुक्राना ज़बां पर मेरी हो हरदम ।
तू बोले खुद ही गाफ़िल; मैं तेरी गुफ़्तार बन जाऊँ ।।'

महाराज जी, मैं यहीं पत्र समाप्त कर रही हूँ । पत्र काफी जल्दी में लिखा है । इस वजह से लिखाई की ओर ध्यान न देकर इस ग़रीबनी की ओर ध्यान दीजिएगा । बच्चों के पापा तथा सब बच्चों की ओर से तथा मेरी ओर से भी आपको प्रतिदिन का बारम्बार चरण-स्पर्श तथा राधास्वामी ! हमारी पूज्य माता जी को भी राधास्वामी ! पत्र के इन्तज़ार में आपकी अपनी उर्मिला ।

मेरी बिखरी हुई अंश प्यारी बेटी उर्मिला !

राधास्वामी, परमदयाल जी सहाई !

तुम्हारा 11 जनवरी का श्रद्धायुक्त, प्रेममय पत्र मिला । तुमने मुझे नव वर्ष की शुभकामनाएँ भेजी हैं । मैं भी तुम्हें और तुम्हारे परिवार को सद्भावना और आशीर्वाद भेजता हूँ ।

यह जगत् द्वन्द्वात्मक और संघर्षमय है । यहाँ पर दुःख-सुख, सर्दी-गर्मी, जय-पराजय, निन्दा-स्तुति, जन्म-मरण दोनों साथ-साथ रहते हे । सुरत अपने अनामी निजधाम

से शान्ति के साम्राज्य को छोड़कर परमतत्त्व का विरह अनुभव करने के लिए इस जगत् में भेजी जाती है। तुम पूछोगी ऐसा क्यों ? यह जगत् या सृष्टि मालिक का खेल है। वह अपने अंशों को जगत् में इसलिए बिखेरता है कि वे उससे बिछुड़कर, तड़पकर उसके सच्चे प्यार का अनुभव करें और तेजी से जगत् से वापिस लौटने के लिए धारा से राधा बनकर उल्टे मार्ग पर चलकर अपने प्रीतम राधास्वामी दयाल के पास लौट जायें। क्योंकि सुरत जगत् में आकर यह भूल जाती है कि वह सत्पुरुष की अंशी है और संघर्ष की धारा में बह जाती है। उसे ऐसा लगता है कि यह द्वन्द्वात्मक अनुभव ही असली अनुभव है। इसलिए वह अपने मित्रों, सम्बन्धियों, अपने धन, अपनी सम्पत्ति और अपनी सफलताओं को ही जीवन का लक्ष्य समझकर धारा बनी रह जाती है। इसी कारण उसे ईर्ष्या, द्वेष, राग और लोभ दबोच लेते हैं। यह जगत् का व्यवहार है। सुरत को इस जगत् के व्यवहार में जितना ज्यादा कटु अनुभव होगा, जितनी ज्यादा निन्दा का अनुभव होगा, उतना ही उसका धारा से राधा बनना सहज हो जायेगा। इसलिए इस जगत् के प्रेमियों से जितने थपेड़े तुम्हें मिलें उनका स्वागत करो। यह थपेड़े सोई हुई सुरत को जगाने के लिए होते हैं।

प्यारी बेटी उर्मिला, तुम्हें मैंने कभी भी मन्दिर से नहीं निकाला है और न कोई कभी भी तुम्हें बिलारी के स्थूल मानवता मन्दिर से और तुम्हारे शरीररूपी मन्दिर से निकालने की ताक़त रखता है। मैं तुम्हारी श्रद्धा को, तुम्हारी सच्ची लगन को, तुम्हारी जिज्ञासा को जानता हूँ। तुम्हारे पत्र से यह स्पष्ट है कि तुम्हारी श्रद्धा निष्ठा में बदल गई है। इसलिए मुझे पूरी आशा है कि तुम मानवता मन्दिर बिलारी के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाती रहोगी। तुम

ही नहीं तुम्हारे पति हरिशंकर और तुम्हारे बच्चे सभी पहले की तरह अपना कर्त्तव्य निभाते रहेंगे।

जैसा मैंने पहले लिखा है कि विरोध और निन्दा का स्वागत करो लेकिन किसी से भी मन में अदावत मत रखो। इससे तुम्हारी आत्मिक तरक्की होगी और तुम कबीर साहिब के नीचे दिये गये पद्य को जीवन म उतार सकोगी :—

कबीर निंदक न मरे, जीवे आद जुगाद।
हम तो सतगुरु पाइया निंदक के परसाद॥

इस प्रकार व्यवहार करने से सिर्फ तुम्हारा ही लाभ नहीं होगा बल्कि जो लोग तुम्हें दुःख दे रहे हैं वे भी ऊपर उठेंगे, उनका भी कल्याण होगा क्योंकि उन्हीं के कारण तुम्हारा मालिक का प्रेम पराकाष्ठा पर पहुँचेगा। तुम दिल से उनको आशीर्वाद दोगी और वो अन्त में तुम्हारे से प्रेम करने लगेंगे। उसी प्रेम के कारण उनका भी कल्याण होगा और बिलारी का वातावरण भी बदल जायेगा। इसलिए मैं समझता हूँ कि जो कुछ भी हो रहा है अच्छा हो रहा है। तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो और सच्चाई से इस मार्ग पर चलती रहो। मालिक का भक्त कभी नष्ट नहीं होता। तुम बहुत भाग्यशाली हो कि तुम्हारा सारा परिवार परमदयाल जी महाराज के सम्पर्क में आया और उन्हीं के मार्ग पर चल रहा है। मैं 7 और 8 फरबरी को बिलारी रहूंगा और सब लोगों को बुलाकर सारे संघर्ष को समाप्त कर दूंगा। तुम सद्भावना बनाये रखो। तुम्हें और तुम्हारे परिवार को दिली आशीर्वाद और राधास्वामी!

तुम्हारा फकीरमय
मानव

होशियारपुर
10-6-86

मेरी अपनी ही आत्मा का अंश;
प्यारी बेटी मंजुला;
राधास्वामी परमदयाल जी सहाय !

तुम्हारा 6 जून का पत्र मिला। तुम्हारी माता जी बहुत अच्छे स्वभाव वाली हैं और उनका विश्वास भी बहुत दृढ़ है। उनको कहें कि वह अभ्यास करती रहें। तुम्हारे अनुभव बहुत अच्छे हो रहे हैं। इनसे यह प्रतीत होता है कि तुम रूहानियत के बहुत से दर्जों को पार कर चुकी हो, इसलिए तुम जो भी इच्छा करोगी वह निश्चित रूप से पूरी हो जावेगी लेकिन मंज़िल शरीर, मन और आत्मा से परे है। तुम्हें उस मंज़िल तक पहुँचने के लिए शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुभ कर्मों के कारण इन तीनों स्तरों का आनन्द भी भोगना होगा। ऐसा करने से कर्मों का बोझ बहुत हल्का हो जायेगा और विरक्ति आनन्दपूर्वक पराभक्ति में परिवर्तित हो जायेगी।

तुम्हारा हीरे का अनुभव बहुत महत्त्वपूर्ण है। हर एक व्यक्ति प्रकाश के विभिन्न आकारों का अनुभव करता है। हीरे का अनुभव सत्तलोक के प्रकाश से भी ऊँचा है। यहाँ हीरे का अर्थ वह अलख, अगम, अनामी परमतत्त्व है जिससे शब्द और प्रकाश की किरणें उदय होती है जो अनामी, अगम और अलख से होती हुई सत्तलोक को प्रकाशमय बनाती हुई त्रिगुणात्मक जगत् की रचना करती हैं। इस रचना को ही स्वामी जी महाराज ने सार वचन में लिखा है—जब वह दयाल पुरुष जो अनामी से परे है, इन किरणों को समेट लेता है तो काल और दयाल देश की सारी रचनाओं को समेट लेता है और प्रकाश तथा शब्द

दयाल पुरुष में विलीन हो जाते हैं। तुम्हारा हीरे का अनुभव दयाल पुरुष का चिन्हात्मक अनुभव है। इसका वास्तविक अनुभव तुम्हें आगे चलकर अभ्यास करते समय स्वतः ही हो जायेगा। इस अनुभव के बाद जीवन्मुक्त अवस्था आती है और एक उनमुन सहज समाधि का नशा चढ़ जाता है।

मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि तुम्हें हिन्दी आफिसर का पद प्राप्त हो जाये और तुम्हारा लड़का परीक्षा में सफल हो जाये। दिली आशीर्वाद और राधास्वामी।

आपका फकीरमय
मानव

आवश्यक सूचना

फकीर लायब्रेरी की पुस्तकें जिन महानुभावों के पास हों वह कृपया उन्हें लौटाने की कृपा करें ताकि अन्य सत्संगी भी लाभ उठा सकें।

सेक्रेटरी :
मानवता मन्दिर
होशियारपुर।

धन्यवाद

जिन महानुभावों ने 'मानव मन्दिर' पत्रिका के लिए योगदान दिया है मानवता मन्दिर उनका हार्दिक धन्यवाद करता है।

सेक्रेटरी :
मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

परमसन्त हजूर मानव दयाल
डा. आई. सी. शर्मा जी महाराज

— का —

माह फरबरी-मार्च 1987 का सत्संग टूर-प्रोग्राम

16-2-87 —होशियारपुर से रवानगी।

17-2-87 सायं —बनवारीपुर सत्संग व रात्रि विश्राम।
C/o श्री जय चन्द त्यागी, बनवारीपुर।

18-2-87 प्रातः —बनवारीपुर से सरसोंहेड़ी प्रस्थान।

19, 20, 21-2-87—सरसोंहेड़ी व सहारनपुर सत्संग
C/o श्री कृष्ण दत्त त्यागी, सत्संगी सरसोंहेड़ी, दयाल टेंट हाऊस, कचहरी रोड, सहारनपुर।

22-2-87 सायं —फरीदाबाद सत्संग
बंगला नं. 72, सेक्टर 21-B।

23-2-87 —मुजफ्फरनगर सत्संग
C/o श्री भूपेन्द्र बत्रा।

24-2-87 —अलीगढ़ सत्संग
इण्डेन गैस कम्पनी, रामघाट रोड, अलीगढ़।

25, 26-2-87 —दयाल नगर सत्संग।

27-2-87 —दयाल नगर से रवाना होकर बरेली में विश्राम।

28-2-87]
1, 2-3-87] —कन्नौज व भट्ठाकोठी सत्संग।
C/o मास्टर मुन्ना लाल।

2-3-87 —कानपुर होते हुए उन्नाव व लखनऊ प्रस्थान।

—C/o डा० जयराम दास, गुमटी नं. 5, कानपुर।

3, 4-3-87 —लखनऊ सत्संग।
C/o श्री कृष्ण मोहन तिवारी,
88-A, गौतम बुद्ध मार्ग, लखनऊ।

5, 6, 7-3-87 —मिश्रिक सत्संग—फकीर सत्संग केन्द्र, मिश्रिक तीर्थ।

8-3-87 —वाया बरेली दिल्ली प्रस्थान एवं रात्रि-विश्राम।

9-3-87 —होशियारपुर वापसी।

———

प्रार्थना

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
अलख अगम और अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये घर पद धामी
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम ।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम ।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।

Regd. No. 26265/74
MANAV MANDIR

FEB. 10th 1987
NWHSP—7

ADDRESS

934 Sh. Chilver Narsimula Muneem
P.O. Tq. Banswada
Distt. Nizamabad A.P.

Phone : 2022

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR-146001

Shiv Dev Rao Press Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)